Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

DL No. DL (E)-20/5275/2020-2022
RNI No. DELHIN/2008/24416

ARF AYURVET RESEARCH FOUNDATION

आयुर्वेट सम्बन्ध किसान की खुशहाली

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 13 ❑ वर्ष : 13 ❑ अंक : 9 ❑ सितम्बर, 2020 ❑ मूल्यः 25.00 ❑ दिल्ली

अपनी दुधारू गाय खुद तैयार कीजिए

गाभिन भैंस की देखभाल

बाढ़ के समय पशुओं की देखभाल

लॉन्ग पेपर/पीपली

मुर्गी पालन : एक फायदेमंद व्यवसाय

AYURVET

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

ARF
AYURVET RESEARCH FOUNDATION

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन को यदि कुशलता एवं ज्ञान के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है।

तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

AYURVET

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.), दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 13 | अंक : 9 | सितम्बर, 2020 | दिल्ली

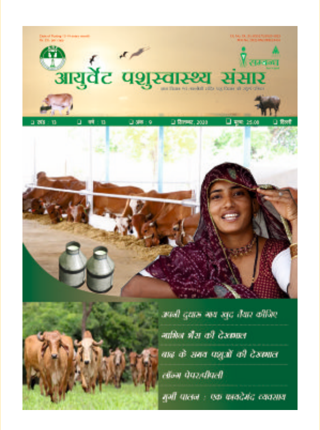

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:
आनन्द मेहरोत्रा एवं डॉ. दीपक भाटिया

संपादकीय सदस्य:
अमित बहल, डॉ. ए.बी. शर्मा, डॉ. भास्कर गांगुली, डॉ. दीप्ति राय, रंजन कुमार राकेश, डॉ. आशीष मुद्गल एवं डॉ. तन्मय सिंह

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/- रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली''** के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/- रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम-71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स : 91-120-7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- अपनी दुधारू गाय खुद तैयार कीजिए 5
- बरसात के मौसम में पशुओं में आहार के माध्यम से होने वाली सबसे महत्वपूर्ण समस्या 12
- गाय/भैंस के बच्चों में अतिसार के कारण, लक्षण, बचाव एवं प्राथमिक उपचार 13
- दुधारू पशुओं के गर्भाशय में अंटा की समस्या और उपचार 15
- गाभिन भैंसों की देखभाल 19
- दो दोस्तों ने कॉर्पोरेट की नौकरी छोड़ खोला डेरी फार्म-जानिए हर महीने कितना कमाते हैं 23
- बाढ़ के समय पशुओं की देखभाल 25
- मधुमक्खी पालन : ऐसे करें 31
- नया भूसा कितना फायदेमंद 35
- लॉन्ग पेपर/पीपली 42
- मुर्गी पालन-एक फायदेमंद व्यवसाय 44

अन्य

- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं 38
- खोज खबर 29
- महत्वपूर्ण दिवस 40

"Save Water, Save Energy, Reduce GHG Emission"

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

केंद्र सरकार ने ऐतिहासिक नई शिक्षा नीति को मंजूरी दे दी है। भारत में 34 साल बाद नई शिक्षा नीति आई है। नई शिक्षा नीति में विशेषज्ञता पर जोर दिया गया, विशेषज्ञों की मानें तो इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आएगा। भारत की अर्थव्यवस्था का अधिकतर हिस्सा कृषि एवं पशुपालन पर आधारित है। इस क्षेत्र में सुधार से निश्चित ही देश की अर्थव्यवस्था में बड़ा सुधार होगा। कृषि शिक्षा व शोध को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के अंतर्गत विकसित ''कृषि मेघ" सहित तीन महत्वपूर्ण सुविधाएं शुरू की गई हैं। इससे डिजिटल इंडिया कड़ी में कृषि क्षेत्र में कम्प्यूटिंग युग की शुरुआत हो गई है। कृषि मेघ के अंतर्गत, बरसों के कृषि संबंधी अनुसंधान का डाटा अब एक ही डिजिटल प्लेटफार्म पर मिल सकेगा, जिसका उपयोग करते हुए तरक्की के नए आयाम हासिल किए जा सकेंगे। शिक्षा में सुधार के साथ-साथ सबसे महत्वपूर्ण है-रोजगार। कृषि के बाद पशुपालन ग्रामीण परिवारों की आजीविका का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। यह सार्थक रोजगार प्रदान करता है और कृषि से प्राप्त आय का पूरक है। लेकिन आज हम पशु की कम उत्पादकता, गुणवत्ता और पशुपालन में कम मुनाफे की चुनौती का सामना कर रहे हैं। यद्यपि केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाएं जा रहे हैं। इसी के अंतर्गत उत्तराखंड सरकार 100 रुपए की दर से पशुपालकों को सैक्स सीमेन उपलब्ध करवा रही है, ताकि अच्छी नस्ल की केवल बछिया ही पैदा हो।

आपके संस्थान आयुर्वेट लिमिटेड द्वारा भी चिड़ाना (सोनीपत, हरियाणा) में किसान जागरूकता अभियान, पशु उपचार एवं औषधीय केंद्र, जैविक खेती, वर्मी कंपोस्ट, बायोगैस एवं औषधियों पौधों की खेती आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य है किसान की आय को बढ़ाकर उसे आत्मनिर्भर बनाना है। कोरोना काल में औषधियों की मांग निरंतर बढ़ रही है। ऐसे में पशुपालक भाई जड़ी-बूटियों जैसे कालमेघ, तुलसी, गिलोय आदि की खेती करके अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

नवीन अंक आपके हाथों में है। इस अंक में हमने महत्वपूर्ण विषयों पर आलेख दिए हैं। हमें पूरा विश्वास है कि पहले अंकों की तरह ही यह अंक भी आपके लिए उपयोगी साबित होगा। आप अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं एवं प्रस्ताव हम तक अवश्य पहुंचाएं, ताकि उसे भी आगामी अंक में स्थान दिया जा सके।

(डॉ. अनूप कालरा)

अपनी दुधारू गाय खुद तैयार कीजिए

-डॉ. संजीव कुमार वर्मा

पैदा होने वाली बछिया अच्छी दुधारू गाय बनेगी या नहीं, इस की नींव उस के पैदा होने से भी पहले पड़ जाती है। इसके लिए सब से खास है गर्भाधान। उस बछिया को पैदा करवाने के लिए गाय का गर्भाधान, जिस वीर्य से कराया गया है, उसी के मुताबिक आनुवंशिक गुणों वाली बछिया पैदा होगी। अगर अच्छी नस्ल के सांड़ के वीर्य से गर्भाधान करवाया गया है, तो पैदा होने वाली बछिया भी निश्चित रूप से उत्तम गुणवत्ता की होगी।

छोटा पशुपालक किसान हो या डेरी चलाने वाला कोई कारोबारी, सब अपने पशुधन का बहुत ख्याल रखते हैं, ताकि दूध देने के मामले में पशु नंबर वन रहे, यही बात गाय पर भी लागू होती है। आज हम जानेगे कि उत्तम दुधारू गाय कैसे तैयार किया जा सकता है।

किसी भी डेरी की कामयाबी के लिए जरूरी है कि उसमें अच्छी दुधारू गाएं हों। दुधारू गाएं बाजार से खरीद कर लाने से बेहतर है कि अपनी खुद की दुधारू गाय तैयार की जाए।

आपके फार्म पर जो बछिया मौजूद है, अगर आप उसकी सही देखभाल करेंगे, उसे सही मात्रा में पोषण उपलब्ध कराएंगे, तो बड़ी हो कर वही बेहतरीन दुधारू गाय बनेगी।

पैदा होने वाली बछिया अच्छी दुधारू गाय बनेगी या नहीं, इस की नींव उस के पैदा होने से भी पहले पड़ जाती है। इसके लिए सब से खास है गर्भाधान। उस बछिया को पैदा करवाने के लिए गाय का गर्भाधान, जिस वीर्य से कराया गया है, उसी के मुताबिक आनुवंशिक गुणों वाली बछिया पैदा होगी। अगर अच्छी नस्ल के सांड़ के वीर्य से गर्भाधान करवाया गया है, तो पैदा होने वाली बछिया भी निश्चित रूप से उत्तम गुणवत्ता की होगी।

दूसरा अहम बिंदु है कि गर्भकाल के दौरान गाय को अगर समुचित पोषण उपलब्ध करवाया गया है, तो पैदा होने वाली बछिया का देह भार आशा के अनुरूप होगा और बाद में वह अच्छी दुधारू गाय के रूप में विकसित होगी। कम देह भार वाली बछिया भविष्य में अच्छी दुधारू गाय नहीं बन सकेगी।

तीसरा अहम बिंदु है कि पैदा होने के बाद नवजात बछिया का पोषण अगर सही से हुआ है, तो वह निश्चित रूप से अच्छी दुधारू गाय बनेगी।

चौथा अहम बिंदु है कि बढ़वार के दौरान उस बछिया को संतुलित पोषण उपलब्ध कराया जाना। अगर बछिया को सभी पोषक तत्त्व उसकी आवश्यकता के अनुरूप दिए जाएंगे, तो उस की दैनिक बढ़वार संतोषजनक होगी और वह नियत समय तक उतना देह भार ग्रहण कर लेगी, जितना उसके गर्भाधान के लिए जरूरी है। इसके बाद समय पर ऋतुमयी हो कर गर्भधारण करेगी और एक बेहतरीन दुधारू गाय बनेगी।

3 महीने की उम्र तक का समय अहम

बछिया के जन्म से लेकर 3 महीने की उम्र तक का समय सबसे अहम होता है। बच्चा मां के पेट से बाहर निकलकर नए वातावरण में आता है, तो उसे तरह-तरह के तनावों का सामना करना पड़ता है। ऐसी हालत में पोषण और प्रबंधन बहुत खास

हो जाता है।

पैदा होने के तुरंत बाद उसे मां का दूध, जिसे खीस भी कहते हैं, पिलाया जाना बहुत जरूरी होता है. जन्म के पहले 4 घंटे के दौरान पिलाया गया खीस नवजात बछिया को बीमारियों से लड़ने की खास ताकत देता है, इसलिए इसे अमृत के समान कहा गया है।

खीस में ऐसा क्या है?

खीस में एक विशेष प्रकार का प्रोटीन होता है। इसे इम्युनोग्लोबुलिंस कहते हैं। इम्युनोग्लोबुलिंस वे सिपाही हैं, जो बछिया के ऊपर किसी भी प्रकार के बैक्टीरिया या वायरस के हमले के समय लड़ते हैं और बछिया की उन तमाम बीमारियों से रक्षा करते है।

खीस में 70 फीसदी से 80 फीसदी तक इम्युनोग्लोबुलिंस 'जी' होते हैं, जो शरीर में प्रवेश करने वाले किसी भी रोगकारक को नष्ट कर देते हैं।

खीस में 10 फीसदी से 15 फीसदी तक इम्युनोग्लोबुलिंस 'एम' होते हैं. यह सैप्टिक फैलाने वाले बैक्टीरिया को खत्म करते है।

खीस में 15 फीसदी तक इम्युनोग्लोबुलिंस 'ए' होते है, जो बछिया की आंतों में चढ़े सुरक्षा कवच 'म्यूकोसा' को बचाते हैं और किसी भी रोगकारक के सामने ढाल बनकर खड़े हो जाते हैं।

सबसे अहम बात यह है कि जन्म के पहले 4 घंटों में इन इम्युनोग्लोबुलिंस का बछिया की आंतों में अवशोषण सबसे ज्यादा होता है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, आंतों की इन को अवशोषित करने की क्षमता घटती जाती है।

इसलिए यह देखा गया है कि जिन बछियों को जन्म के पहले 4 घंटों के अंदर खीस नहीं मिलता है, उन के अंदर रोग ज्यादा लगते हैं और उन बछियों में मृत्युदर भी अपेक्षाकृत अधिक होती है।

खीस में इन इम्युनोग्लोबुलिंस के अलावा प्रोटीन, विभिन्न विटामिंस, मिनरल्स, ऊर्जा प्रदान करने वाले लैक्टोज और फैट होते हैं। इसके अतिरिक्त खीस में कुछ मात्रा में इंसुलिन हार्मोन और अन्य ग्रोथ फैक्टर (आईजीएफ-1) होते हैं, जो बछिया को ऊर्जा प्रदान करते हैं और उस की बढ़वार में सहायक होते हैं।

बछिया के जन्म से लेकर अगले 24 घंटे के दौरान गाय से निकलने वाले दूध को खीस कहते हैं और 24 से 72 घंटों के बीच निकलने वाले दूध को ट्रांजिशन मिल्क कहते हैं।

खीस और ट्रांजिशन मिल्क का संगठन सामान्य दूध से अलग होता है। 72 घंटों के बाद निकलने वाले दूध का संगठन बदल जाता है और इसे सामान्य दूध कहते हैं। इस सामान्य दूध को ही बेचा जाता है।

4 घंटों के अंदर खीस पिलाया जाना जरूरी

नवजात बछिया को जन्म के 4 घंटों के अंदर खीस पिलाया जाना बहुत जरूरी है। जिन बछियों को इन पहले 4 घंटों के दौरान खीस नहीं पिलाया जाता, उन के जिंदा रहने की संभावना कम हो जाती है। अगर वे जिंदा रहें भी तो वे अच्छी दुधारू गाय बन ही नहीं सकतीं।

बछिया जब पैदा होती है, तो उसकी अपनी कोई रोग प्रतिरोधकता नहीं होती है, जिसके कारण वह बहुत जल्दी किसी भी रोग की चपेट में आ सकती है। खीस उसे रोग प्रतिरोधकता प्रदान करता है और उसके खुद के रोग प्रतिरोधक तंत्र को विकसित करने में सहायता प्रदान करता है।

जब बछिया पैदा होती है, तो उसके पास न तो पर्याप्त ग्लाइकोजन स्टोर होता है और न ही इतना फैट होता है कि इन दोनों के उपापचय से बछिया को जीने के लिए पर्याप्त ऊर्जा मिल जाए। इस समय बछिया को ऊर्जा मिलती है खीस से ही। खीस में मौजूद कुल सौलिड का तकरीबन 5वां हिस्सा आसानी से पचने योग्य फैट होता है। इसी फैट के पाचन से बछिया को आवश्यक ऊर्जा मिलती है और उस की वृद्धि होती है।

बछिया मां के पेट के अंदर हमेशा एक निश्चित वातावरण और तापमान में रही है। पेट से बाहर आने के बाद वातावरण का तापमान भिन्न होता है। खीस के कारण ही बछिया उस तापमान से तालमेल बैठा पाती है।

एक स्टडी में तो यहां तक पाया गया है कि खीस पीने के 1 घंटे बाद बछिया के शरीर का तापमान 15 फीसदी तक बढ़

जाता है।

खीस में मौजूद इम्युनोग्लोबुलिंस का अवशोषण वैसे तो अगले 16 घंटों तक होता रहता है, मगर सर्वाधिक अवशोषण पहले 4 घंटों में ही होता है। बछिया को इन पहले 4 घंटों में खीस न पिलाने से उसे जीवन के पहले एक महीने के दौरान श्वसन तंत्र के रोगों से सामना करना पड़ेगा और 30 फीसदी मामलों में बछिया की मौत तक हो जाती है।

इम्युनोग्लोबुलिंस के अलावा खीस में 'लैक्टोफेरिन' पाया जाता है, जिस के कारण बछिया विभिन्न बैक्टीरिया, फंगस, वायरस और प्रोटोजोआ के हमलों से बची रहती है। इसी के कारण बछिया में डायरिया के कारण होने वाली मौतों पर भी लगाम लगती है।

बछिया जब पैदा होती है, तो उसकी आंतों में कोई भी लाभकारी माइक्रोफ्लोरा नहीं होता है। खीस में कुछ खास लाभकारी बैक्टीरिया भी मौजूद होते हैं, जो बछिया की आंतों में जा कर सैटल हो जाते हैं। लाभकारी बैक्टीरिया की उपस्थिति के कारण वहां हानिकारक बैक्टीरिया पनप नहीं पाते। खीस पीने वाली बछिया को सब से घातक बैक्टीरिया ई कोलाई का इंफैक्शन बहुत कम होता है।

खीस पीने वाली बछिया की उत्पादकता बेहतर होती है और वह अच्छी दुधारू गाय बनने के बाद ज्यादा समय तक जिंदा रहती है।

जिन बछियों को खीस पिलाया जाता है, उनमें वृद्धिकाल में वृद्धि की दर भी अपेक्षाकृत अधिक होती है और वह अपेक्षाकृत कम समय में सर्विस कराए जाने के लिए तैयार हो जाती है।

जिन बछियों को खीस पिलाया जाता है, वे अपने पहले ब्यांत में ज्यादा दूध देती हैं। खीस दस्तावर भी होता है, जिस के कारण बछिया के पेट में मौजूद मल जिसे मैकोनियम कहते हैं, आसानी से बाहर निकल जाता है।

बछिया का भरण पोषण किस तरह से करना होगा?

बछिया के जन्म के बाद शुरुआती 4 घंटों में पिलाया गया खीस, उस के बाद के 68 घंटों में पिलाया गया खीस और फिर 6 महीने की उम्र तक पिलाया गया दूध और उसे खिलाए गए अन्य खाद्य पदार्थ जैसे हरा चारा, सूखी मुलायम घास और काफ स्टार्टर उस की वृद्धि और परिपक्वता को निर्धारित करेंगे।

हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि बछिया को इस तरह से पोषण दिया जाए कि पहली सर्विस के समय वह परिपक्व देहभार का कम से कम 60 फीसदी से 70 फीसदी देहभार प्राप्त कर ले।

बछिया जिस प्रजाति की है, उस प्रजाति की बड़ी गाय का औसत देहभार अगर 400 किलोग्राम होता है, तो सर्विस कराते समय औसर (हीफर) का वजन कम से कम 240 किलोग्राम होना चाहिए या दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि जितनी जल्दी औसर का वजन 240 किलोग्राम होगा, उतनी ही जल्दी वह सर्विस कराए जाने के काबिल हो जाएगी।

आप की औसर अब 2 साल की हो चुकी है। उसका वजन 260 किलोग्राम हो चुका है और उसके जननांग भी पूर्ण विकसित हो चुके हैं। वह पहली हीट के लक्षण भी दिखा रही है, मगर आप को यह हीट छोड़ देनी है।

1. **गाय ऋतुचक्रः** यह 21 दिन का होता है, मगर इसकी रेंज 18 से 24 दिन होती है। नियत समय पर गाय फिर से हीट में आती है, तो आपको दूसरी हीट भी छोड़ देनी है और तीसरी हीट का इंतजार करना है।

इस दौरान उसे 16 किलोग्राम हरा चारा, 1 किलोग्राम भूसा और ढाई किलोग्राम रातिब मिश्रण देते रहना है। मगर अब रातिब मिश्रण में क्रूड प्रोटीन की मात्रा 16 फीसदी भी सही होगी।

2. ऐसा मान लीजिए कि 2 साल पौने 3 महीने की उम्र होने पर उसने तीसरी हीट के लक्षण दिखाएं, तो अब उसे गाभिन कराने का सही समय आ गया है।

3. किसी अच्छे कृत्रिम गर्भाधानकर्ता की मदद से उसे अच्छी पेडिग्री वाले सांड़ के वीर्य से ही गाभिन करवाना है। कृत्रिम गर्भाधान होने के बाद औसर को किसी भी तरह के तनाव में नहीं आने देना है।

4. अब उस के अंदर 2 चीजें एक साथ चलेंगी। एक तो उस

की खुद की वृद्धि हो रही होगी, दूसरे उसके अंदर एक नया जीवन भी पनपने लगेगा। गर्भाधान के पहले 6 महीने तक किसी अतिरिक्त पोषण की जरूरत नहीं है।

5. अब औसर की उम्र 33 महीने है और इस दौरान उसका वजन बढ़ कर 350 किलोग्राम हो चुका है। अब गर्भ की उचित बढ़वार के लिए उसे कुछ अतिरिक्त पोषण की जरूरत है।

6. 34वें महीने (गर्भकाल के 7वें महीने) में उसे 16 किलोग्राम हरा चारा, 1 किलोग्राम भूसा और 3 किलोग्राम 16 फीसदी क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण प्रतिदिन देंगे।

7. 35वें महीने (गर्भकाल के 8वें महीने) में उसे 16 किलोग्राम हरा चारा, 1 किलोग्राम भूसा और साढ़े 3 किलोग्राम 16 फीसदी क्रूड प्रोटीन तथा रातिब मिश्रण प्रतिदिन देंगे।

8. 36वें महीने (गर्भकाल के 9वें महीने) में उसे 16 किलोग्राम हरा चारा, 1 किलोग्राम भूसा और 4 किलोग्राम 16 फीसदी क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण प्रतिदिन देंगे।

9. 16 फीसदी क्रूड प्रोटीन वाला 100 किलोग्राम रातिब मिश्रण बनाने के लिए मक्का 40 किलोग्राम, गेहूं का चोकर 40 किलोग्राम, सरसों की खली 17 किलोग्राम, अच्छी गुणवत्ता का विटामिन मिनरल मिक्सचर 2 किलोग्राम और साधारण नमक 1 किलोग्राम को भली भांति मिलाने की जरूरत होगी।

10. 36 महीने पूरे होते-होते आपकी गाय लगभग 4 क्विंटल की हो चुकी होगी और अब एक नए जीवन को जन्म देगी। चूंकि इस की खिलाई पिलाई संतोषजनक हुई है, इसलिए यह जो बच्चा देगी उस का वजन भी 25 से 30 किलोग्राम के बीच होना चाहिए।

आप के घर में बछिया और बछड़ा आने की संभावनाएं आधी-आधी हैं। अगर बछिया आई, तो आपके चेहरे पर मुस्कान आना भी निश्चित है और अगर बछड़ा आया, तो भी निराश होने की जरूरत नहीं है। यही बछड़ा बड़ा होकर गौवंश को आगे बढ़ाएगा। वीर्यदान करने के लिए 'विकी डोनर' भी तो चाहिए कि नहीं?

अगर बछड़ा हुआ तो उस बछड़े का भी उतना ही ध्यान रखना है, जितना बछिया का रखते होंगे। अगर सभी बछड़े मर गए या यों कहिए कि मार दिए गए तो 'विकी डोनर' कौन बनेगा? जब 'विकी डोनर' खत्म हो जाएंगे, तो क्या वीर्य के लिए विदेशों पर निर्भर रहोगे? नहीं। हमें खुद ही सक्षम बनना होगा।

अब आपको इसके नवजात का पोषण बिल्कुल वैसे ही करना है, जैसे इस बछिया का किया था। मगर अब मां बन चुकी इस गाय को विशेष पोषण चाहिए, क्योंकि खुद के शरीर में रख-रखाव के लिए और दूध उत्पादन के लिए। अपने खुद के बच्चे के लिए इसे उतना दूध नहीं पैदा करना है, जितना इसे आप के बच्चों का ख्याल है। अगर आप ने शैड्यूल के मुताबिक भरण-पोषण किया है, तो इस ताजा ब्याई गाय की जेर ज्यादा से ज्यादा 12 घंटों में गिर जाएगी। अगर नहीं गिरती है, तो आपको किसी पशुचिकित्सक की शरण में जाना ही होगा। गर्भकाल के दौरान प्रोटीन की कमी होने पर जेर गिरने में समस्या आती है। इस समय दुधारू गाय को हम भरपेट हरा चारा देंगे। साथ में देंगे कुछ मात्रा में भूसा और रातिब मिश्रण की एक निश्चित मात्रा अब 3 स्थितियां हो सकती हैं:-

- आपके पास हरा चारा बहुत कम है और जो हरा चारा उपलब्ध है, वह गैरदलहनी चारा है और आपके पास पर्याप्त भूसा और प्रचुर मात्रा में रातिब मिश्रण उपलब्ध है।
- आप के पास गैरदलहनी हरा चारा भी पर्याप्त मात्रा में है और भूसा भी और रातिब मिश्रण भी।
- आपके पास दलहनी और गैरदलहनी हरा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, भूसा भी है, मगर रातिब मिश्रण लिमिटेड है या बिल्कुल नहीं है।

दुधारू गाय का पोषण उसके दुग्ध उत्पादन और दूध में उपस्थित वसा की मात्रा पर निर्भर होगा। यहां हम आपको 3 उत्पादन स्तर वाली गायों के पोषण के बारे में बताएंगे:-

- 5 लीटर दूध उत्पादन वाली
- 10 लीटर दूध उत्पादन वाली
- 15 लीटर दूध उत्पादन वाली

पहले बात करते हैं 5 लीटर दूध उत्पादन वाली गाय की तीनों स्थितियों में पोषण की। स्थिति 1 में 5 लीटर दूध देने वाली गाय को 5 किलोग्राम गैरदलहनी हरा चारा, 6 किलोग्राम भूसा और 5 किलोग्राम 16 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण देना होगा। चूंकि इसमें रातिब मिश्रण की मात्रा ज्यादा

है, इसलिए यह ज्यादा महंगा साबित होगा और उत्पादन लागत बहुत ज्यादा होगी। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़कर तकरीबन 50 रुपए प्रति लीटर होगी।

लागत मूल्य से ज्यादा विक्रय मूल्य होने पर ही आप कुछ कमाई कर पाएंगे। 16 फीसदी क्रूड प्रोटीन वाला 100 किलोग्राम रातिब मिश्रण बनाने के लिए मक्का 40 किलोग्राम, गेहूं का चोकर 40 किलोग्राम, सरसों की खली 17 किलोग्राम, अच्छी गुणवत्ता का विटामिन मिनरल मिक्सचर 2 किलोग्राम और साधारण नमक 1 किलोग्राम को अच्छी तरह से मिलाने की जरूरत होगी।

स्थिति 2 में 5 लीटर दूध वाली गाय को 24 किलोग्राम गैरदलहनी हरा चारा, 2 किलोग्राम भूसा और 2.5 किलोग्राम 16 फीसदी क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण प्रतिदिन देंगे। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़ कर तकरीबन 42 रुपए प्रति लीटर होगी। दूध 50 रुपए प्रति लीटर बेच कर भी आप कुछ न कुछ बचा ही लेंगे।

स्थिति 3 में 5 लीटर दूध देने वाली गाय को 15 किलोग्राम दलहनी हरा चारा, 10 किलोग्राम गैरदलहनी हरा चारा और 6 किलोग्राम भूसा देने से भी सभी पोषण जरूरतें पूरी हो जाएंगी और यह सब से सस्ता भी होगा। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़ कर तकरीबन 35 रुपए प्रति लीटर होगी।

यह सबसे ज्यादा फायदा देने वाली स्थिति है। कुल मिला कर यह कह सकते हैं कि हरा चारा और भूसा खिलाकर दूध पैदा करना सब से सस्ता होता है। साथ ही, बिना रातिब मिश्रण खिलाए केवल दलहनी और गैरदलहनी चारा खिलाकर 5 लीटर तक दूध उत्पादन लिया जा सकता है, मगर इससे ज्यादा दूध उत्पादन वाली गायों के लिए रातिब मिश्रण देना जरूरी हो जाएगा। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि दूध उत्पादन जितना ज्यादा होगा, उत्पादन लागत उतनी ही कम होती जाएगी, इसलिए किसी भी डेरी की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि कम उत्पादन वाले ज्यादा पशुओं के स्थान पर ज्यादा उत्पादन वाले कम पशु रखे जाएं। किसान के पास पर्याप्त मात्रा में हरा चारा उपलब्ध हो। साथ ही, रातिब मिश्रण खुद बनाया जाए। खुद बनाया गया रातिब मिश्रण गुणवत्ता में भी अच्छा होगा और सस्ता पड़ेगा। इसके अलावा दूध की बिक्री बिचौलियों के माध्यम से न कर के खुद की जाए, ताकि उपभोक्ता को भी फायदा हो और आपको भी दूध का उचित दाम मिल पाए। दूध की मार्केटिंग तो आपको हर हाल में सीखनी पड़ेगी।

अब बात करते हैं दस लीटर दूध उत्पादन वाली गाय के भरण पोषण की। स्थितियां वही तीन हो सकती हैं:-

1. आपके पास हरा चारा बहुत कम है और जो हरा चारा उपलब्ध है वह गैर दलहनी चारा है और आपके पास पर्याप्त भूसा और प्रचुर मात्रा में रातिब मिश्रण उपलब्ध है।

2. आपके पास गैरदलहनी हरा चारा भी पर्याप्त मात्रा में है और भूसा भी और रातिब मिश्रण भी।

3. आपके पास दलहनी और गैरदलहनी हरा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, भूसा भी है मगर रातिब मिश्रण लिमिटेड है या बिल्कुल नहीं है।

स्थिति 1 में दस लीटर दूध देने वाली गाय को 8 किलोग्राम गैर दलहनी हरा चारा, 5 किलोग्राम भूसा और 7.5 किलोग्राम 16 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण देना होगा। चूंकि इसमें रातिब मिश्रण की मात्रा अधिक है इसलिए यह अधिक महंगा साबित होगा और उत्पादन लागत बहुत अधिक होगी। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़कर लगभग 34 रुपये प्रति लीटर होगी। लागत मूल्य से अधिक विक्रय मूल्य होने पर ही आप कुछ कमाई कर पाएंगे।

सोलह प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाले रातिब मिश्रण को बनाने की विधि हम पहले भी बता ही चुके हैं। चलो एक बार फिर बता ही देते हैं। सोलह प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाला 100 किलोग्राम रातिब मिश्रण बनाने के लिए मक्का 40 किलोग्राम, गेहूँ का चोकर 40 किलोग्राम, सरसों की खली 17 किलोग्राम, अच्छी गुणवत्ता का विटामिन मिनरल मिक्सचर 2 किलोग्राम और साधारण नमक 1 किलोग्राम को भली भांति मिलाने की आवश्यकता होगी।

स्थिति 2 में दस लीटर दूध वाली गाय को 10 किलोग्राम दलहनी चारा, 20 किलोग्राम गैर दलहनी हरा चारा, 3 किलोग्राम भूसा और 3 किलोग्राम 16 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण प्रतिदिन देंगे। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़कर लगभग 27 रुपए प्रति लीटर होगी। दूध चालीस रुपये प्रति लीटर बेचकर भी आप कुछ ना कुछ बचा ही लेंगे।

स्थिति 3 में दस लीटर दूध देने वाली गाय को 22 किलोग्राम दलहनी हरा चारा, 22 किलोग्राम गैर दलहनी हरा चारा, 3 किलोग्राम भूसा और मात्र 100 ग्राम अच्छी गुणवत्ता का विटामिन मिनरल मिक्सचर प्रतिदिन देने से भी सभी पोषण आवश्यकताएं पूरी हो जाएंगी और यह सबसे सस्ता भी होगा। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़कर लगभग 23 रुपये प्रति लीटर होगी। यह सबसे अधिक लाभ देने वाली स्थिति है।

अब डिसाइड आपको करना है कि आप हरे चारे के बल पर उत्पादन लेना चाहते हैं या रातिब मिश्रण के बल पर। हरे चारे पर मेंटेन किये गए पशु के दूध से बने घी में एक विशेष फ्लेवर होती है।

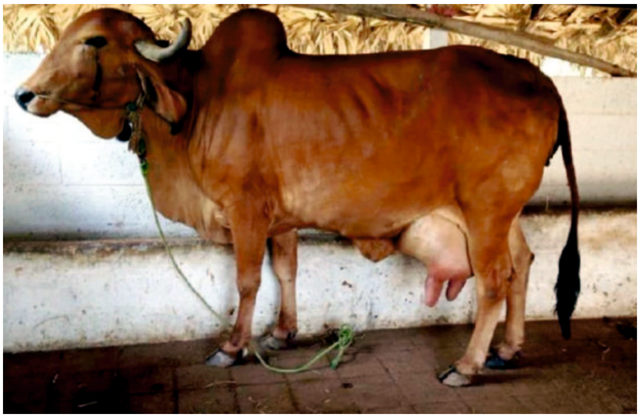

अब बात करते हैं पन्द्रह लीटर दूध उत्पादन वाली गाय के भरण पोषण की। स्थितियां वही तीन हो सकती हैंः-

1. आपके पास हरा चारा बहुत कम है और जो हरा चारा उपलब्ध है वह गैर दलहनी चारा है और आपके पास पर्याप्त भूसा और प्रचुर मात्रा में रातिब मिश्रण उपलब्ध है।

2. आपके पास गैरदलहनी हरा चारा भी पर्याप्त मात्रा में है और भूसा भी और रातिब मिश्रण भी।

3. आपके पास दलहनी और गैरदलहनी हरा चारा पर्याप्त मात्र में उपलब्ध है, भूसा भी है मगर रातिब मिश्रण लिमिटेड है या बिल्कुल नहीं है।

स्थिति 1 में पन्द्रह लीटर दूध देने वाली गाय को 15 किलोग्राम गैर दलहनी हरा चारा, 3 किलोग्राम भूसा और 10 किलोग्राम 16 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण देना होगा। चूंकि इसमें रातिब मिश्रण की मात्रा अधिक है इसलिए यह अधिक महंगा साबित होगा और उत्पादन लागत बहुत अधिक होगी। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़कर लगभग 28 रुपये प्रति लीटर होगी। लागत मूल्य से अधिक विक्रय मूल्य होने पर ही आप कुछ कमाई कर पाएंगे।

सोलह प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाला 100 किलोग्राम रातिब मिश्रण बनाने के लिए मक्का 40 किलोग्राम, गेहूँ का चोकर 40 किलोग्राम, सरसों की खली 17 किलोग्राम, अच्छी गुणवत्ता का विटामिन मिनरल मिक्सचर 2 किलोग्राम और साधारण नमक 1 किलोग्राम को भली भांति मिलाने की आवश्यकता होगी।

स्थिति 2 में पन्द्रह लीटर दूध वाली गाय को 10 किलोग्राम दलहनी चारा, 20 किलोग्राम गैर दलहनी हरा चारा, 2 किलोग्राम भूसा और 7 किलोग्राम 16 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण प्रतिदिन देंगे। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़कर लगभग 25 रुपए प्रति लीटर होगी। दूध चालीस रुपये प्रति लीटर बेचकर भी आप कुछ ना कुछ बचा ही लेंगे।

स्थिति 3 में पन्द्रह लीटर दूध देने वाली गाय को 22 किलोग्राम दलहनी हरा चारा, 22 किलोग्राम गैर दलहनी हरा चारा, 2 किलोग्राम भूसा, 3.5 किलोग्राम 16 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन वाला रातिब मिश्रण और मात्रा 50 ग्राम अच्छी गुणवत्ता का विटामिन मिनरल मिक्सचर प्रतिदिन देने से भी सभी पोषण आवश्यकताएं पूरी हो जाएंगी और यह सबसे सस्ता भी होगा। इसकी उत्पादन लागत सभी खर्चे जोड़कर लगभग 22 रुपये प्रति लीटर होगी। यह सबसे अधिक लाभ देने वाली स्थिति है।

अब डिसाइड आपको करना है कि आपके पास किस प्रकार का चारा और कितनी मात्रा में उपलब्ध है। □□

प्रधान वैज्ञानिक (पशु पोषण)
केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ

एक्सापार
प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु
AYURVET
ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय
गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे
रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
EXAPAR
LIQUID
UTERINE CLEANSER & RESTORATIVE
एक्सापार
द्रव
1 लीटर बोतल
500 मि.ली. पैट बोतल
4 बोलस की एक स्ट्रिप

बरसात के मौसम में पशुओं में आहार के माध्यम से होने वाली सबसे महत्वपूर्ण समस्या

पशुओं को गला सड़ा चारा व खल बिनौले देने से पशुओं के साथ-साथ दूध पीने वाले लोगों के शरीर पर भी असर पड़ता है। फफूंदी लगे हुए इस चारे में एफलाटोक्सिन बी वन नामक एक विषैला पदार्थ पैदा होता है, जिसे खाने के बाद पशु एफलाटोक्सिन एमवन नामक एक विषैला पदार्थ पैदा करते हैं। यह टोक्सिन दूध के जरिए मानव शरीर में चला जाता है, जिससे कैंसर जैसे खतरनाक रोग होने का खतरा रहता है। दूध में एफलाटोक्सिन एमवन की पहचान करना इतना आसान काम नहीं है, क्योंकि यह बहुत कम मात्रा में पाया जाता है।

पशुओं से अधिकतम दूध उत्पादन प्राप्त करने के लिए उन्हें पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक चारे की आवश्यकता होती है। इसके लिए किसान पशुओं को खल, बिनौले, फीड तथा विभिन्न प्रकार के अनाज के दाने के रूप में पशुओं को खिलाते हैं तथा भविष्य के लिए इसका भंडारण भी करते हैं। अगर इस प्रकार के आहार का सावधानीपूर्वक भंडारण न किया जाए, तो उसमें फफूंदी पैदा हो जाती है तथा यह फंफूदी एफलाटोक्सिन बी वन पैदा करती है। मुख्यरूप से फफूंदी नमी तथा गर्म वातावरण में अधिक पैदा होती है। इस फफूंदी लगे हुए आहार को खाने से एफलाटोक्सिन बी वन पशुओं के शरीर में चला जाता है और उनके लीवर में एफलाटोक्सिन एम वन में परिवर्तित हो जाता है तथा दुधारू पशुओं के दूध के जरिए मानव शरीर में प्रवेश कर जाता है।

हालांकि एफलाटोक्सिन एम वन, बी वन से कम घातक होता है, परंतु इससे कैंसर होने का खतरा रहता है। इस टोक्सिन की आसान तरीके से पहचान करने के तरीके विकसित करने पर काम अभी चल रहस है।

72 घंटे तक रहती है दूध में आने की संभावना

छः प्रतिशत एफलाटोक्सिन बी वन, एम वन में परिवर्तित हो जाता है। एक बार पशु इस एफलाटोक्सिन बी वन वाले चारे को खा ले तो लगभग 72 घंटे तक इस टोक्सिन की दूध में आने की संभावना रहती है। इसकी जांच के लिए अत्याधुनिक उपकरण तथा प्रशिक्षित व्यक्ति की जरूरत होती है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण एफएसएसएआई ने इसके मानक तय किए हैं, जोकि 0.5 माइक्रोग्राम प्रति लीटर दूध में है।

दूध को गर्म करने से भी नहीं मरता टोक्सिन

दूध को गर्म करने के बाद भी यह टोक्सिन नष्ट नहीं होता है। जिसे पीने से मनुष्य को कैंसर सहित कई प्रकार के रोग होने का खतरा बना रहता है। अंतरराष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान संस्था, फ्रांस ने भी एफलाटोक्सिन बी वन टोक्सिन को ग्रुप 2 बी श्रेणी में शामिल किया है। इस श्रेणी में उन पदार्थो को ही शामिल किया गया है, जिनसे कैंसर पैदा करने की संभावना अधिक है।

यही नहीं पशुओं में भी यह एफ्लाटॉक्सिन बहुत ज्यादा प्रभाव स्वास्थ्य पर डालता है। अक्सर जब हम अपने पशुओं को बरसात के दिनों में खासकर जुलाई-अगस्त सितंबर के महीने में सूखा चारा जैसे कि धान या गेहूं का पुआल देते हैं उस पुआल में नमी ज्यादा रहती है उस नमी के चलते उसमें फफूंद लग जाती है। जब पशु पुआल को या सूखे चारे को खाता है तब अफलाटॉक्सिन बीमारी से ग्रसित हो जाता है। इसमें पशु का लीवर यानी की यकृत खराब हो जाता है, पशु खाना पीना कम कर देता है, बाद में जौंडिस हो जाता है, यदि इसका इलाज नहीं किया गया तो पशु मर भी जाता है। इसका उपचार के लिए निकटतम पशु चिकित्सक से सलाह लेना चाहिए तथा अपने पशुओं को समय-समय पर बाजार में उपलब्ध लीवर टॉनिक देना चाहिए साथ ही पशु के सूखा चारा या हरा चारा को धूप में सुखाकर ही खाने के लिए देना चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि पशु पूरक आहार में नमी ना हो। यदि आप पशु आहार बनाते हैं तो उसमें टॉक्सिन बाइंडर का उपयोग जरूर करें।

गाय/भैंस के बच्चों में अतिसार के कारण, लक्षण, बचाव एवं प्राथमिक उपचार

-डॉ. संजय कुमार मिश्र

अतिसार रोग को कोलीबेसिलोसिस या कोली सेप्टीसीमिया या काफ स्कोरस के नाम से भी जाना जाता है। यह रोग गाय भैंस के नवजात बच्चों में होता है, जिसमें पशु को तीव्र अतिसार होता है तथा बच्चा लड़खड़ा कर गिर जाता है।

कारण

यह एक जीवाणु जनित रोग है, जो ई. कोलाई के नाम से जाना जाता है और सामान्यतः आंतों में ही पाया जाता है। जब आंतों की साम्यावस्था अस्त व्यस्त होती है, तो यह जीवाणु अपना उग्र रूप धारण करता है और बड़ी तेजी से अपनी संख्या में अपार वृद्धि करके टॉक्सिंस उत्पन्न करता है, जिसके परिणामस्वरूप दस्त, मस्तिष्क की सूजन, अत्यधिक निर्जलीकरण एवं मृत्यु हो जाती है।

रोग उत्पन्न करने वाली परिस्थितियां

- बच्चों को खीस या प्रथम दूध के न मिलने के कारण इम्युनोग्लोबुलिंस की कमी होना।
- गाय भैंस के शरीर में विटामिन "ए" की कमी।
- बच्चों को उनकी आवश्यकता से अधिक मात्रा में दूध पिला देना।
- बड़े बच्चों की आंतो में गोल कृमि पड़ जाना तथा गोल कृमियों का नवजात बच्चे में पाया जाना।
- बच्चों के व्यायाम की समुचित व्यवस्था ना होना तथा भैंस के बच्चों का स्वाभाविक रूप से सुस्त होना।
- भैंस के दूध में अधिक वसा या चिकनाई का होना।
- बच्चों के लिए स्वच्छ तथा हवादार स्थान का अभाव होना।

लक्षण

शुरुआत में बच्चा सुस्त हो जाता है, दूध पीना बंद कर देता है तथा उसे बुखार आ जाता है। कुछ घंटों के उपरांत पीलापन लिए हुए मटमैले, सफेद, बदबूदार अतिसार हो जाता है। अधिक दुर्बलता के कारण बच्चा चलने फिरने में असमर्थ हो जाता है। रक्त में पानी की कमी हो जाती है तथा 2 से 3 दिन में बच्चे की मृत्यु हो जाती है।

बचाव

रोग उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से बचाव करें।

चिकित्सा

नजदीकी कुशल पशु चिकित्सक की सलाह से निम्नांकित औषधियों का प्रयोग किया जा सकता है-

- इंजेक्शन टेटरासाइक्लिन 5 मिली अंतः पेशी सूची वेध तथा 5 मिलीलीटर अंता सिरा सूची वेध द्वारा 3 से 5 दिन तक दें।
- डेक्सट्रोज सेलाइन या रिंटोंस 500 मिलीलीटर अंता शिरा सूची बेध विधि से 3 से 5 दिन तक दिलवाए।
- विटामिन बी कंपलेक्स लीवर एक्सट्रैक्ट के साथ 5 मि.ली. अंत पेशी सूची वेध विधि से 3 से 5 दिन तक दें।
- विटामिन ए 6000 इंटरनेशनल यूनिट अंतः पेशी सूची वेध विधि से 3 से 5 दिन तक दें।
- नोरफ्लाक्स टी जेड की एक से दो टेबलेट सुबह शाम दे।
- डबल टोंड/वसा रहित दूध का सेवन करना काफी असरकारक है। □□

पशु चिकित्सा अधिकारी
चौमुंहा मथुरा

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी

धान की नर्सरी

गन्ने की नर्सरी

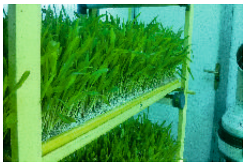

हरा चारा

अब खरीदें और पाएं सब्सिडी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 7985318152

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक एक, लाभ अनेक

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। मिट्टी पौधों के लिए पोषक पदार्थों के संवाहक का काम करती है, लेकिन मिट्टी पौधे की वृद्धि के लिए स्वयं जरूरी नहीं होती। यदि पौधों को जरूरी तत्व पानी में घोलकर दें, तो पौधों की जड़ें उन्हें प्रयोग करने में सक्षम होती हैं एवं पौधों की वृद्धि सामान्य रहती है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

- इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।
- इस विधि में वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है, क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है।
- पौधों में कीड़े और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है।
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के उपयोग

- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से धान की नर्सरी तैयार करना।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से साग-सब्जी के पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से औषधीय व मसाले वाले पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से व्हीट ग्रास का उत्पादन।

दुधारू पशुओं के गर्भाशय में अंटा की समस्या एवं उपचार

-आशुतोष बसेडा, अवनीश कुमार सिंह, जीतेन्द्र अग्रवाल, अतुल सक्सेना

पशुपालन हमारे देश की अर्थव्यवस्था एवं पशुपालकों की समृद्धि व खुशहाली में अहम भूमिका रखता है। पशुपालन व्यवसाय से अधिक से अधिक धन कमाने के लिए पशुओं के रहन सहन, खानपान के साथ ही उनमे होने वाली बीमारियों/समस्याओं की जानकारी होना भी नितांत आवश्यक है। इन जानकारियों के अभाव एवं उपचार मे विलम्ब होने से काफी नुकसान उठाना पड़ सकता हैं, पशुओं के गर्भाशय में अंटा (टोर्सन) एक ऐसी ही समस्या है, जिसकी उचित जानकारी होने तथा तात्कालिक उपचार होने से इससे होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है।

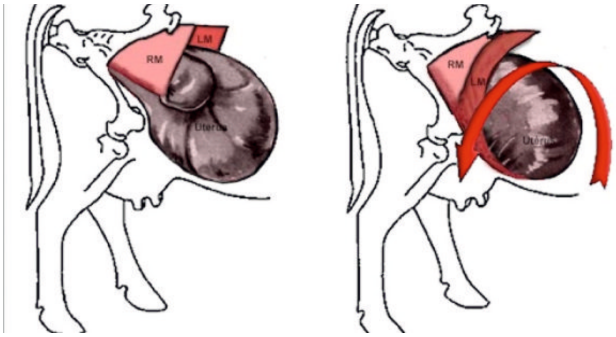

पशुओं के गर्भाशय में अंटा की समस्या

गर्भित पशु के गर्भाशय का अपनी लम्बवत धुरी में घूम जाने को गर्भाशय में अंटा लगना कहते है। गर्भाशय में अंटा की समस्या प्रसव के निकट समय या कभी-कभी गर्भावस्था के बीच में भी देखने को मिलती है। सामान्यता गर्भाशय में अंटा की समस्या कठिन प्रसव की समस्या को जन्म देती है। गर्भाशय में अंटा की समस्या गायों की तुलना मे भैसों में ज्यादा देखने को मिलती है, क्योकि भैस का शरीर गाय की तुलना में बड़ा होता है, जिसके कारण गर्भाशय को घूमने के लिए ज्यादा जगह मिल जाती है। साथ ही भैस की तालाब आदि मे लोटने की आदत होना आदि प्रमुख कारण है। बच्चे की गर्भाशय में ही मृत्यु होने की संभावना रहती है, क्योकि गर्भाशय में मुड़ाव के कारण बच्चे में माँ से जाने वाले खून के संचार में रुकावट आ जाती है। गर्भाशय के अधिक समय तक मुड़े रहने पर और ध्यान न देने की स्थिति पर मुड़ा हुआ गर्भाशय आसपास के अंगो से चिपक जाता है, जोकि माँ की प्रजनन क्षमता को खत्म कर देता है। इसीलिए पशुपालकों को इस समस्या के लक्षण और इसके रोकथाम के तरीको के बारे में अवगत कराना जरूरी है।

गर्भाशय में अंटा लगने के कारण

पशुओं में द्विशृंगी (दो हॉर्न) गर्भाशय होता है तथा गर्भावस्था के समय में गर्भाशय के एक ही हॉर्न में बच्चा रहता है, जिससे गर्भाशय का एक हॉर्न दूसरे हॉर्न की अपेक्षा भारी हो जाता है। इस वजह से गर्भाशय अस्थिर अवस्था में रहता है। बच्चे का भार ज्यादा होना, बच्चे का गर्भाशय में ज्यादा हिलना डुलना, गर्भाशय में पानी कम होना, दूसरे पशु का अचानक धक्का मारना, गर्भाशय की परत का शिथिल पड़ना, पशु का प्रसव के समय बार-बार उठना बैठना, पशु को गर्भावस्था की स्थिति में ट्रांसपोर्ट करने पर, पशु के बार-बार उठने बैठने से और पशु के अचानक गिरने आदि घटनाएं पशु में गर्भाशय में अंटा लगने की समस्या को प्रेरित करती है।

गर्भाशय में अंटे के प्रकार

गर्भाशय के घूमने की दिशा के आधार पर अंटा दो प्रकार का होता है-

दायी दिशा (साइड) का अंटा गर्भाशय का घड़ी के चलने की दिशा मे मुड़ने को इंगित करता है।

बायी दिशा (साइड) का अंटा गर्भाशय का घड़ी के चलने की विपरीत दिशा में मुड़ने को इंगित करता है।

पशु के गर्भाशय का बाई तरफ या दायी तरफ को मुड़ना पशु के पीछे वाले तरफ से देखने पर निर्धारित करते है।

गर्भाशय के भाग (जगह) के घूमने के आधार पर अंटा दो प्रकार का होता है-

प्री सर्विकल अंटा गर्भाशय का गर्भाशय ग्रीवा के अगले

भाग से घूमने को इंगित करता है।

पोस्ट सर्विकल अंटा गर्भाशय का गर्भाशय ग्रीवा के पिछले भाग से (योनिमार्ग वाला भाग) से घूमने को इंगित करता है।

गर्भाशय की ऐठन(डिग्री) की स्थिति के आधार पर अंटे के प्रकार-

इस आधार पर अंटा 900, 1800, 2700 या 3600 का हो सकता है।

गर्भाशय में अंटा लगने का पता लगाना

प्रसव के समय बार-बार जोर लगाने पर भी बच्चा गर्भ से बाहर नहीं निकले या पशु के बार-बार उठने बैठने और बैचेन रहने के साथ पैरों को पेट की तरफ मारता है, तो पशु को गर्भाशय के अंटा के लिए संदिग्ध किया जा सकता है।

गर्भाशय के अंटा को पता करने के लिए अंटा की दिशा, जगह और डिग्री का पता होना बहुत जरूरी है। दुधारू पशुओं में सामान्यता दायी दिशा (साइड) का अंटा, पोस्ट सर्विकल अंटा और 1800 की ऐठन वाला अंटा ज्यादा देखने को मिलता है।

गर्भाशय में अंटा का पता लगाने के लिए हाथों में पूरे बाजू के दस्तानें पहनकर तथा पैराफिन लगाकर योनिमार्ग व गुदाद्वार से गर्भाशय की जाँच करना चाहिए।

योनिमार्ग के मुड़े होने की स्थिति मे हाथ भी उसी तरफ को मुड़ जाएगा, जिस तरफ की ऐठन होगी। दाएं तरफ की ऐठन में हाथ दायी तरफ और बाएं तरफ की ऐठन में हाथ बाई तरफ को घूम जाएगा। इसी तरह डिग्री का पता करने के लिए यदि हाथ गर्भाशय ग्रीवा तक न पहुचें, तो इसे 1800 से ज्यादा का अंटा कहते है और 1800 और उससे कम के अंटे में हाथ घूमने के बाद गर्भाशय ग्रीवा खुली होने पर बच्चा भी आसानी से महसूस किया जा सकता है।

प्री सर्विकल अंटे का पता लगाने के लिए मादा पशु के गर्भाशय की जाँच उसके गुदाद्वार से करनी चाहिए। इस स्थिति मे गर्भाशय को स्थिर रखने वाले बंधन खीच जाते है। दायी तरफ के अंटे होने पर बाई तरफ का बंधन, दायी तरफ को खींच जाता है और बाई तरफ का अंटे में दायी तरफ का बंधन बाई तरफ को खीच जाता है।

पशुओं के गर्भाशय में अंटे का उपचार

गर्भाशय के अंटे का पता करने के बाद पशु की स्थिति को ध्यान में रखना चाहिए। टोक्सिमिया और सेप्टिसिमिया के लक्षण होने पर पशु को पहले ड्रीप लगानी चाहिए। पशु को सहायक उपचार के बाद गिराना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि जिस तरफ का अंटा हो पशु की वही साइड जमीन की तरफ रखें। आगे वाले पैरों को एक साथ और पीछे वाले पैरों को एक साथ अलग-अलग दो लंबी रस्सियों से बांध कर, पशु के ऊपर पटरा (फ्लेंक) रखकर उस पर एक आदमी को चढ़ाकर पशु को उसी तरफ को तेजी से रोल करते है जिस तरफ की ऐठन है, जिससे की पशु का शरीर गर्भाशय के मुकाबले तेजी से घूम जाय। कई बार अंटा खुलते ही बहुत सारा पानी बाहर आ जाता है, यह भी अंटे के खुलने की निशानी है। यह प्रक्रिया 3 बार अंटे के न खुलने की स्थिति में पशु को और रोल न करवाएं। बार-बार रोल कराने से पशु की जान के लिए भी खतरा बन जाता है। पशु का उपचार पास के पशु चिकित्सालय में चिकित्सक से ही करवाएं।

पशुपालकों के लिए संदेश

पशुपालक को गर्भाशय का अंटा होने के कारणों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। पशु को गर्भावस्था की स्थिति में बिना जरूरी समस्या के ट्रांसपोर्ट करने से बचे। पशु के रहने वाले स्थान को फिसलन वाला न रखें, जिससे की पशु गिरने से बच सके। भैंस को गर्भावस्था के अंतिम महीनों में पानी और कीचड़ में न जाने दे। यदि प्रसव के समय पर पशु के बार-बार जोर लगाने पर भी बच्चा गर्भ से बाहर नहीं निकलता है और पशु बार-बार उठना बैठना करता है और बैचेन रहता है, तो इस स्थिति में पशु को बिना देरी किए हुए पशुचिकित्सक के पास ले जाएं। □□

मादा पशु प्रजनन रोग विभाग,
पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, दुवासु, मथुरा

सदस्य बनें

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

एक अच्छी आदत पड़ जाए
जो ज्ञान का दीप जलाएं

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.).
दूरभाष: 91-120-7100201

कृपया स्पष्ट लिखें/टाइप करें:

☐ स्वयं के लिए ☐ मित्र को भेंट ☐ संस्थागत

नाम:..संस्थान...

पता:☐ कार्यालय ☐घर..

....

पिन..

दूरभाष:☐ कार्यालय ☐घर...

मैं राशि.......................................नकद/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/चैक क्रमांक.......................................(दिल्ली से बाहर के लिए 15 रुपए अतिरिक्त जोड़कर दें) दिनांक... "आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली" के नाम प्रेषित कर रहा हूं। कृपया पत्रिका प्रेषित करें।

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 275/- रुपए

कीटोसिस एवं नेगेटिव एनर्जी बैलेंस से छुटकारा पाएं

कीटोरोक अपनाएं

TM AYURVET

कीटोरोक के फायदे

- लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
- शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
- दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे

कीटोरोक

कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

उपचार के लिए:

200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार *2* दिनों तक, अगले *2* दिन *100* मि.ली. दिन में एक बार

गाभिन भैंसों की देखभाल

-डॉ. नगेन्द्र कुमार त्रिपाठी

गर्भावस्था में पशुओं की खास देखभाल की जरूरत होती है, गर्भकाल के अंतिम तीन महीनों में पशुपालक कुछ बातों का ध्यान रखकर नुकसान से बच सकते हैं।

कोरोना के चलते पिछले कुछ महीनों में बहुत सारे काम प्रभावित हुए हैं, पशुपालन भी उन्हीं में एक है। गाय-भैंस पालन में बहुत ध्यान देने की जरूरत होती है, खास कर गर्भावस्था में खास ख्याल रखना होता है, थोड़ी सी लापरवाही से बहुत नुकसान हो सकता है।

पशुपालन व्यवसाय के लिए भैंस को हर 12-14 महीने बाद ब्याना चाहिए और लगभग 10 महीने तक दूध भी देना चाहिए, लेकिन आमतौर पर दो ब्यांत के बीच में 14-16 महीनों का अंतर होता है और यह रख-रखाव और पशुओं के दिए जाने वाले आहार पर निर्भर करता है। भैंस में दो पूर्वकाल के बीच का समय 60 से 90 दिनों तक होना चाहिए। इस बीच दूध उत्पादन के समय हुई पोषक तत्वों की कमी की भरपाई और गर्भ में पलने वाले पोषण की जरूरत पूरी करते हैं।

गर्भकाल के अंतिम तीन महीने में अतिरिक्त पोषक तत्वों की जरूरत होती है, इस समय भैंस का वजन 20 से 30 किलो तक बढ़ भी जाता है। इस समय संचित पोषक तत्वों से ब्याने के बाद के दूध उत्पादन में मदद मिलती है। गर्भावस्था के आखिरी तीन महीनों में नियमित आहार के साथ ही दो किलो ऊर्जायुक्त दाना मिश्रण देना चाहिए, जिससे गर्भ में पल रहे बच्चे को उचित पोषण मिल सके। ब्याने से पहले मिले इस अतिरिक्त पोषक तत्वों को पशु अपने शरीर में जमा कर लेता है और ब्याने के पश्चात दूध उत्पादन में उपयोग करता है।

गर्भकाल के आखिरी तीन महीनों में देखभाल

- इस काल या अवस्था में भैंस को दौड़ने या अधिक चलने से बचाना चाहिए और चरने के लिए दूर भी नहीं भेजना चाहिए।
- भैंस कहीं फिसल न जाए, इसलिए उसे फिसलने वाली जगहों पर नहीं जाने देना दीजिए और चिकने फर्श पर घास-फूस, पुआल बिछाकर रखना चाहिए।
- गर्भवती भैंस को दूसरे अन्य पशुओं से लड़ने मत दीजिए।
- भैंस के आहार में एक किलोग्राम अतिरिक्त दाना देना जरूरी है। दाने में एक प्रतिशत नमक व नमक रहित खनिज लवण भी दीजिए। अगर हो सके तो एक प्रतिशत हड्डी का चूरा भी अलग से दें।
- पीने के लिए स्वच्छ व ताजा पानी ही हर समय देना चाहिए।
- गर्मी के मौसम में भैंस को दिन में 2-3 बार नहलाएं व तेज धूप से बचाएं। भैंस के बांधने की जगह अगले पैरों के तरफ नीची और पिछले पैरों की तरफ थोड़ी ऊंची होनी चाहिए। यदि बांधने की जगह इसके उलट है, तो गाभिन भैंस में फूल या गर्भाशय दिखने की संभावना बढ़ जाती है।
- गर्भकाल के आखिरी महीनों में भैंस को तालाब में लेटने के लिए भी नहीं ले जाना चाहिए। जल्दी ब्याने वाली भैंस का आवास अलग होना चाहिए और इसके लिए उसे 100-120 वर्ग फुट ढका क्षेत्र और 180-200 वर्ग फुट खुला क्षेत्र जरुर देना चाहिए।

गर्भकाल के आखिरी माह में प्रबन्धन

- यदि भैंस दूध दे रही है, तो भैंस का दोहन बन्द कर देना चाहिए। ब्याने से 2 महीने पहले भैंसों का दूध निकालना बन्द कर देना चाहिए, नहीं तो बच्चे कमजोर पैदा होगा, अगले ब्यांत में पशु कम दूध देगा और भैंसों की प्रजनन क्षमता भी प्रभावित होगी।
- भैंस को प्रसव तक 2-3 किलोग्राम दाना प्रतिदिन दीजिए। यदि उसे कब्ज रहता हो तो अलसी का तेल पिलाएं।
- ब्याने के 20 से 30 दिन पहले भैंस को दस्तावर आहार जैसे गेहूं का चोकर, अलसी की खल आदि दाने में खिलाएं। यदि हरा चारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो तो इस मिश्रण की आवश्यकता नहीं पड़ती।
- अगर संभव हो तो गाभिन भैंस को दूसरे पशुओं से अलग रखिए, ताकि उसकी देखरेख भली-भांति हो सके। गाभिन भैंस को उन पशुओं से दूर रखना उचित होगा, जिनका गर्भ गिर गया हो।
- प्रथम बार ब्याने वाली भैंस के शरीर पर हाथ फेरते रहना चाहिए और प्यार करना चाहिए।

भैंसों में प्रसव से पूर्व के लक्षण

- प्रसव के 2-3 दिन पहले पशु कुछ सुस्त हो जाता है और दूसरे पशुओं से अलग रहने लगता हैं।
- पशु आहार लेना कम कर देता हैं।
- प्रसव से पहले उसके पेट की मांसपेशियों सिकुड़ने या बढ़ने लगती हैं और पशु को पीड़ा शुरु हो जाती है।
- योनिद्वार में सूजन आ जाती है और योनि से कुछ लसलसा पदार्थ आने लगता है।
- पशु का अयन सख्त हो जाता है, पशु के कूल्हे की हड्डी वाले हिस्से के पास 2-3 इंच का गड्ढा पड़ जाता है।
- पशु बार-बार पेशाब करता है।
- पशु अगले पैरों से मिट्टी कुरेदने लगता है।

प्रसव काल में भैंस की देखभाल

- जहां तक हो सके प्रसव के समय पशु के आसपास किसी प्रकार का शोर नहीं होने देना चाहिए और न ही पशु के पास अनावश्यक किसी को जाने दीजिए।
- जल थैली दिखने के एक घंटे बाद तक यदि बच्चा बाहर न आए तो बच्चे को निकलने में पशु की सहायता के लिए अनुभवी और योग्य पशु चिकित्सक की मदद लें।
- बच्चे के बाहर आ जाने पर उसे भैंस द्वारा चाटने दीजिए, ताकि वह सूख जाये। आवश्यकता हो तो बच्चे को साफ और नरम तौलिए या कपड़े से रगड़ कर पोंछ दीजिए, ताकि उसके शरीर पर लगा सारा श्लेष्मा साफ हो जाये।
- प्रसव के बाद जेर गिरने का पूरा ध्यान रखिये और जब तक यह गिर न जाये भैंस को खाने को कुछ मत दीजिए। सामान्यतः जेर निष्कासन में 6 से 8 घंटे का समय लगता हैं जेर न गिरने पर पशु चिकित्सक की सहायता लीजिए।
- प्रसव के बाद जननांगों के बाहरी भाग, कोख और पूंछ को गुनगुने साफ पानी से, जिसमें पोटेशियम परमैंगनेट के कुछ दाने पड़े हों या नीम की पत्ती के उबले हुए पानी से धो दीजिए। इसके पश्चात् पशु को गरम पेय जिसमें गुड़ का घोल, चोकर (500 ग्राम) या नमक पड़ा हो पीने के लिये दीजिए। यह पेय भैंस को दो दिन तक सुबह और शाम तक देते रहना चाहिए। भैंस को एक-दो दिन तक गुड़ व जौ का दलिया भी खिलाना लाभदायक होगा।
- दो दिन के बाद धीरे-धीरे चोकर की मात्रा बढ़ाते हुए चूनी

व खली आदि मिलाकर बना हुआ दाना थोड़ी-थोड़ी मात्रा में खिलाना प्रारम्भ करें।
- 15-20 दिन बाद दूध की मात्रा के अनुसार दाना देना प्रारम्भ कर दें।

प्रसव के बाद भैंसों की देखभाल

ब्याने के पश्चात् भैंस ही नहीं, बल्कि बछड़े-बछड़ी की देख

ब्याने से पहले पशु क्या संकेत देते हैं?

ब्याने की अवस्था को जानना पशुपालकों के लिए बहुत जरुरी है। सभी पशु यदि वह सामान्य अवस्था में नहीं है, तो वह संकेतों के माध्यम से बताता है। विभिन्न अवस्थाओं में से ब्याने से पूर्व भी पशु कुछ संकेत देते हैं।

ब्याने से पहले के संकेत(ब्याने से 24 घंटे पहले) ब्याना गर्भनाल/जेर का निष्कासन करना। यदि पशु के योनि द्वार से स्वच्छ श्लेष्मा का रिसाव हो रहा हो और थनों का दूध से भर जाना प्रारंभ हो जाए, तो इसे ही पशु के ब्याने की शुरूआत माना जाता है। समूह से अलग रहने की कोशिश करता है। पशु की भूख खत्म हो जाती है। पशु बेचैन होता है और पेट पर लातें मारता है या अपने पार्श्व/बगलों को किसी चीज से रगड़ने लगता है। पीठ की मांसपेशियां ढीली पड़ जाती है, जिससे पूँछ ऊपर उठ जाती है। योनि का आकार बड़ा एवं मांसल हो जाता है। थनों में दूध का भराव ब्याने के 3 सप्ताह पहले से लेकर ब्याने के कुछ दिन बाद तक हो सकता है।

ब्याने के दिन का पता लगाना

पशु का गर्भधान करवाएं तो गर्भाधान की तारीख लिखकर रखें। पशु पुनः मद में न आएं, तो गर्भाधान के 3 माह बाद गर्भ जाँच अवश्य करवाएं। यदि गर्भाधान सही हुआ है, तो आप उसके ब्याने का समय निकाल सकते हैं, क्योकि गाय का औसत गर्भकाल 280-290 दिन एवं भैंस का 305-318 दिन होता है।

ब्याने के संकेत

ब्याने के 30 मिनट पहले से लेकर 4 घंटे तक सामान्य रूप से

ब्याते समय बछड़े के आगे के पैर और सिर सबसे पहले दिखाई देते हैं। ब्याने की शुरूआत पानी का थैला दिखाई देने से होती है। यदि बछड़े की स्थिति सामान्य है, तो पानी का थैला फटने के 30 मिनट के अंदर पशु बछड़े को जन्म दे देता है। प्रथम बार ब्याने वाली बछड़ियों में यह समय 4 घंटे तक हो सकता है। पशु खड़े खड़े या बैठकर ब्या सकता है। यदि पशु को प्रसव पीड़ा शुरु हुए ज्यादा समय हो जाएँ और पानी का थैला दिखाई न दे, तो तुरंत पशु चिकित्सा सहायता बुलानी चाहिए।

गर्भनाल/जेर का निष्कासन

सामान्यतया गर्भनाल/जेर पशु के ब्याने के 3-8 घंटे बाद निष्कासित हो जाती है। अगर ब्याने के 12 घंटे बाद तक भी गर्भनाल न गिरे, तो इसे गर्भनाल का रुकाव कहते हैं। कभी भी रुकी हुई गर्भनाल को ताकत लगाकर नहीं खींचे, इससे तीव्र रक्तस्राव हो सकता है और कभी-कभी पशु की मौत भी हो सकती है।

रेख भी ठीक प्रकार से करें। थोड़ी सी असावधानी से पशुओं में जनन सम्बंधी रोग उत्पन्न हो सकते हैं। प्रसव के बाद भैंस की देख रेख अच्छी तरह से होनी चाहिए, ताकि किसी भी प्रकार का जनन रोग उत्पन्न न हो, दूध देने की क्षमता बनी रहे और पशु समय पर गर्मी में आकर गाभिन हो। आमतौर पर पशु को ब्याने के बाद 2-6 घंटे के अन्दर जेर गिरा देनी चाहिए। लेकिन कमजोर पशुओं में या बच्चेदानी में रोग होने और प्रसव के समय अधिक पीड़ा के कारण जेर बच्चेदानी से अलग नहीं हो

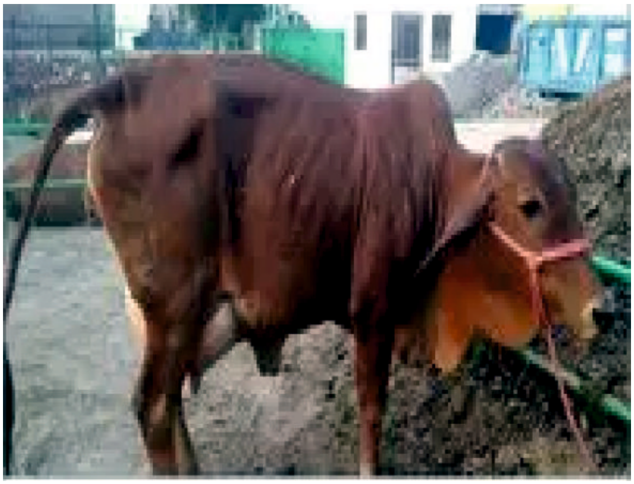

पाती और यह बच्चेदानी के अन्दर ही रह जाती है। कभी-कभी जनन अंगों में किसी रुकावट के कारण जेर शरीर से बाहर नहीं गिरती और बच्चेदानी में ही सड़ती रहती है। यह विकार विटामिन-ए तथा आयोडीन की कमी के कारण भी हो सकता है। यदि पशु ब्याने के बाद समय से जेर नहीं गिराए तो घबराना नहीं चाहिए और न ही किसी अनुभवहीन व्यक्ति से जेर बाहर निकलवानी चाहिए। इससे बच्चेदानी में जेर के टूटने से रक्त भी बह सकता हैं और हाथ डालने के कारण विषाणु बाहर से बच्चेदानी में प्रवेश कर सकते हैं, जिससे बच्चेदानी में सूजन और मवाद पड़ सकती हैं इस कारण पशुओं का मदचक्र अनियमित होने के साथ-साथ पशु समय पर गर्मी में भी नहीं आते। ऐसे में पशुओं में गर्भधारण करने में बहुत समय लग जाता है। ऐसी दशा में योग्य पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिये तथा उनके निर्देशानुसार ही पशु का उपचार कराना चाहिए।

□□

वैज्ञानिक पशुपालन (9452820333)

चिड़ाना में पशुस्वास्थ्य केंद्र

स्वस्थ पशु और खुशहाल किसान के लक्ष्य को लेकर आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन गांव चिड़ाना (सोनीपत) में अनेक किसान हितकारी गतिविधियां संचालित कर रहा है। इसी श्रृंखला में, चिड़ाना में आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य केंद्र आरंभ किया गया है।

इस केंद्र द्वारा पशुपालकों को अनेक सुविधाएं एवं जानकारियां उपलब्ध करवाई जाएगी। इसमें कुछ प्रमुख हैं-

- पशुओं के लिए उचित मूल्य पर आयुर्वेदिक औषधियां
- कृषि के लिए उत्कृष्ट जैविक खाद
- पशुओं में थनैला रोग की जांच और उपचार की सुविधा
- पशु पोषण एवं संतुलित आहार
- कृत्रिम गर्भाधान सुविधा
- बेहतर प्रजनन क्षमता
- कृमि जांच आदि

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-0120-7100283

□□

दो दोस्तों ने कॉर्पोरेट की नौकरी छोड़ खोला डेरी फार्म-जानिए हर महीने कितना कमाते हैं

डेरी फार्मिंग के क्षेत्र में ऐसे हजारों नए लोग जिन्होंने अपने जुनून और जज्बे से न सिर्फ नया मुकाम हासिल किया है, बल्कि अपनी मेहनत और इनोवेशन से लोगों को शुद्ध दूध उपलब्ध करा रहे हैं।

प्रगतिशील डेरी किसानों की इस श्रृंखला में आज हम आपको बता रहे हैं गुवाहाटी के दो ऐसे युवाओं की कहानी, जो कई वर्ष कार्पोरेट सैक्टर में नौकरी करने के बाद डेरी फार्मिंग के क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रहे हैं। जी हां, हम बात कर रहे हैं गुवाहाटी के प्रगतिशील डेरी फार्मर 38 वर्षीय अंजन ज्योति फुकन और 36 वर्षीय नीलोत्पल बरुआ की।

'ईस्ट वैली डेरी फार्म' बना शुद्ध दूध की गारंटी

गुवाहाटी के अंजन ज्योति फुकन ने 2006 में बैंगलोर से एमबीए किया और दस वर्षों तक कई नामी कार्पोरेट हाउसेस में नौकरी की, लेकिन वे हमेशा अपने शहर में कुछ जमीन से जुड़ा काम करना चाहते थे।

इसी दौरान उनकी मुलाकात नीलोत्पल बरुआ से हुई, जो मीडिया में फोटो जर्नलिस्ट थे। दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई। अंजन की तरह ही नीलोत्पल भी कुछ ऐसा इनोवेटिक काम करना चाहते थे, जिससे कमाई के साथ-साथ समाज की सेवा भी हो। बस दोनों लोग विचार करने लगे। तभी उन्हें पता चला की उनके होम स्टेट असम में दूध की खपत राष्ट्रीय औसत की तुलना में बहुत कम है।

बीते कुछ वर्षों में नॉर्थ ईस्ट का विकास बहुत तेज गति से हो रहा था, बड़ी संख्या में देशभर के लोग असम की ओर रुख कर रहे थे, लेकिन उनकी सबसे बड़ी समस्या थी कि उन्हें शुद्ध दूध नहीं मिलता था। बस यही से दोनों दोस्तों के दिमाग में डेरी फार्म स्थापित कर असम के लोगों को शुद्ध दूध उपलब्ध कराने का आइडिया आया। और 2018 में इन्होंने अपनी-अपनी नौकरी छोड़कर गुवाहाटी के पास विजयनगर टाउन में ढाई बीघा जमीन लीज पर लेकर डेरी फार्म खोला और उसका नाम रखा 'ईस्ट वैली डेरी फार्म'।

12 जर्सी गायों से शुरू किया था डेरी फार्म

अंजन ज्योति फुकन की माने तो डेरी फार्मिंग की कुछ जानकारी नहीं थी, लेकिन उन्हें बस इतना बता था अच्छी नस्ल की गायों से उच्च क्वालिटी का दूध का उत्पादन करना है और गुवाहाटी के लोगों को उपलब्ध कराना है।

स्टडी के बाद उन्होंने अपने डेरी फार्म में जर्सी गायों को लाने का फैसला किया। क्योंकि जर्सी गाय का दूध गाढ़ा होता है, उसमें फैट अधिक होता है और सबसे बड़ी बात गुवाहाटी के लोगों को ये गाढ़ा दूध काफी पसंद था।

अंजन ने 12 जर्सी गायों के साथ डेरी फार्म शुरू किया और सभी गायें वे बैंगलुरू से गुवाहाटी लेकर आए। अंजन बताते हैं कि आज उनके डेरी फार्म में 20 गायें हैं, जिनमें से 9 गायें मिल्किंग हैं। हर गाय 12 से 13 लीटर दूध देती है, यानि उनके डेरी फार्म में करीब 100 लीटर दूध का प्रोडक्शन होता है।

डेरी फार्म पर गायों के लिए प्राकृतिक माहौल

अंजन ज्योति फुकन ने बताया कि उनके डेरी फार्म का दूध गुवाहाटी में 80 रुपये प्रति लीटर बिकता है। उन्होंने अपने डेरी फार्म पर गायों को नेचुरल माहौल उपलब्ध कराया है, क्योंकि उनका मानना है कि प्राकृतिक और खुले वातावरण में गायें अच्छे से रहती हैं। हालांकि गायों की मिल्किंग के लिए मशीन का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि दूध को किसी का हाथ नहीं लगे और ग्राहकों को पूरी तरह शुद्ध दूध मिले। गायों को खिलाते क्या हैं, इसके जवाब में अंजन ने बताया कि वे अपने फार्म पर ही फीड बनाते हैं, जिसमें कॉर्न पाउडर, मस्टर्ड खली, राइस पॉलिश आदि मिलाया जाता है। साथ ही गायों को मकई का हरा चारा और धान का भूसा भी खिलाया जाता है।

Farmtree एप से डेरी फार्म का संचालन हुआ आसान

अंजन बताते हैं कि डेरी फार्म की सभी गतिविधियों को वे और नीलोत्पल मिलकर संभालते हैं, दो-तीन कर्मचारियों को भी रखा गया है, लेकिन उन्हें डेरी फार्म के संचालन में बहुत परेशानी होती थी। तभी उन्हें डेरी फार्म के लिए विशेष रूप से विकसित किए गए इनोवेटिव मोबाइल एप Farmtree के बारे में पता चला। उन्होंने अपने फार्म के लिए Farmtree एप की सेवाएं लेना शुरू किया और देखते ही देखते उनकी सारी परेशानियों खत्म हो गई।

अंजन के मुताबिक Farmtree एप से गायों के फीड मैनेजमेंट, वैक्सीनेशन की तारीख, एआई की तारीख, गाय की हीट का समय, मिल्क मैनेजमेंट सबकुछ पता करना आसान हो गया। Farmtree एप के जरिए मोबाइल पर ही सारा इनपुट मिलता रहता है और डेटा के एनालिसिस से डेरी फार्म की ताजा स्थिति पता चलती रहती है।

अंजन ने बताया कि Farmtree एप की टीम से जब भी जरूरत हो फार्म मैनेजमेंट के लिए जरूरी सपोर्ट भी मिलता है। सबसे बड़ी बात है कि पूरे साल के लिए Farmtree एप का सबस्क्रिप्शन सिर्फ 2800 रुपये में मिलता है। उन्होंने कहा कि डेरी फार्म के लिए Farmtree एप बहुत ही जरूरी एप है और छोटे डेरी किसानों के लिए तो एक वरदान की तरह है।

डेरी फार्मिंग में आने वाले कठिन स्ट्रगल के लिए तैयार रहें

अंजन ज्योति फुकन बताते हैं कि डेरी फार्म के संचालन में करीब एक लाख रुपये प्रति महीने का खर्च आता है। भविष्य की योजनाओं के बारे में उन्होंने बताया कि इस साल 20 और गाय फार्म पर बढ़ाएंगे, क्योंकि उनके फार्म के दूध की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। डेरी फार्मिंग में किस्मत आजमाने

वाले युवाओं से अंजन का कहना है कि अगर डेरी फार्मिंग और पशुपालन में इंटरेस्ट हो तभी इस क्षेत्र में आएं और कठिन स्ट्रगल के लिए तैयारी रहें। क्योंकि जब स्ट्रगल करेंगे तभी सफल होंगे। उन्होंने कहा कि युवाओं को डेरी सेक्टर में जरूर आना चाहिए, क्योंकि जितने अधिक लोग इस सेक्टर में आएंगे, उतना ही शुद्ध और मिलावट रहित दूध लोगों को मिलेगा। □□

बाढ़ के समय पशुओं की देखभाल

-डा. प्रमोद मडके[1] व डा. रमेश चंद्रा[2]

बाढ़ की त्रासदी ने कई राज्यों में इंसान के सामने भोजन ही नहीं, बल्कि पशुओं के लिए भी चारा संकट उत्पन्न कर दिया है। पशुओं का रखा गया चारा भी पानी में डूब गया है। बाढ़ के कारण घर छोड़ सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने वाले पशुपालक मवेशियों का पेट नहीं भर पा रहे हैं। आवश्यकतानुसार चारा न मिलने से पशुओं की सेहत गिरने लगी है। दुधारु पशुओं ने दूध की मात्रा कम कर दी है। चारे के संकट से पशुपालकों की परेशानियां बढ़ गई हैं। पशुपालक अपने मवेशी के लिए चारा ऊंचे दामों पर खरीदने को विवश हैं। चारा के अलावा मवेशी के बीमार होने की संभावना ज्यादा है। बाढ़ का पानी आने के साथ ही पशुपालकों की परेशानी बढ़ जाती है।

मवेशियों के मामले में भारत नंबर एक पर है। भारत में बहुत से पशुओं के जरिए दूध, मांस व अंडे वगैरह का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। करोड़ों पशुपालक किसानों की जिंदगी पशुओं के बल पर चलती है। भौगोलिक वजहों से देश के कई इलाकों में किसानों को हर साल कुदरती आपदाओं का सामना करना पड़ता है, जिससे पशुधन उत्पादन में करोड़ों का नुकसान होता है। कुदरती आपदाओं में बाढ़, भूकंप, तूफान (सुनामी)और सूखा खास हैं। बाढ़ आजादी के बाद देश को कई बार बुरी तरह से तबाह कर चुकी है। देश में अलग-अलग बारिश के कारण कई क्षेत्रों में सूखा पड़ जाता है और कई जगहों पर बाढ़ का पानी भर जाता है। बाढ़ की वजह से गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर और इंसानों को कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे हालात में इंसान अपनी हिफाजत में लगा रहता है और अपने मवेशियों का ख्याल नहीं करता, जिससे काफी नुकसान होता है, जबकि बाढ़ के वक्त अपने पशुओं का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए।

पशुओं की हिफाजत के लिए आकस्मिक दस्ता

बाढ़ के समय, पशुओं के नुकसान को कम करने के लिए अक्लमंद व फौरन फैसला लेने वाले लोगों का एक आकस्मिक दस्ता बनाना चाहिए, जोकि पशुकल्याण के लिए भलाई का काम कर सके। आकस्मिक दस्ते में पशुचिकित्सक, पशुपोषण विशेषज्ञ, लोकस्वास्थ्य विशेषज्ञ, माहिर स्वैच्छिक कार्यकर्ता और गैरसरकारी संगठनों के सक्रिय लोगों को शामिल करना चाहिए।

विशेषज्ञों के इस दस्ते को समय-समय पर स्थानीय प्रशासन को समस्या हल करने के तरीके सुझाने चाहिए, जिस से कि जानमाल का कम से कम नुकसान हो।

स्थानीय प्रशासन को बाढ़ आपदा के समय वाहनों, दवाओं, रोग के टीके व साफ पानी वगैरह का इंतजाम रखना चाहिए, जिससे कि बाढ़ के बाद पैदा होने वाली मुसीबतों को सुलझाया जा सके।

बाढ़ के बाद विशेषज्ञों के दल को निम्न बातों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिएः-

- खराब पानी का शुद्धिकरण
- खराब पशु आहार सामग्री का निबटान
- सही पशु आहार का इंतजाम
- मरे हुए पशुओं का निबटारा
- मच्छर मक्खी की रोकथाम

बरसात के मौसम में पशुओं की समुचित देखभाल की जरूरत: एनडीडीबी

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) ने ज्यादा बरसात और विशेषकर बाढ़ग्रस्त इलाके में दुधारू मवेशियों में संक्रमण बढ़ने और दुग्ध उत्पादन के प्रभावित होने के खतरे को देखते हुए ऐसे मवेशियों की समुचित देखभाल को जरूरी बताया।

एनडीडीबी ने सहकारी दुग्ध संस्थाओं को परामर्श जारी किया है कि वे अपने प्रशिक्षित पेशेवर सदस्यों के माध्यम से किसानों के बीच जाकर मवेशियों की देखभाल, स्वास्थ्य प्रबंधन और चारे व दवा के उपयोग के बारे में समुचित जानकारी दें। एनडीडीबी के अध्यक्ष, दिलीप रथ ने कहा, बरसात का मौसम पशुपालकों के लिए बेहद चुनौती पूर्ण होता है। ऐसे में दुधारू पशुओं के चारा, स्वास्थ्य प्रबंधन, दूध दोहन प्रबंधन का विशेष ध्यान होना चाहिए। बरसात का मौसम पशुओं में बीमारियों के लिए सबसे घातक समय होता है।

बाढ़ और बरसात के कारण इस मौसम में पौष्टिक चारे की कमी और संक्रमण का खतरा आम दिनों के मुकाबले अधिक होता है, जिससे दुधारू मवेशियों को बचाते हुए उनकी समुचित देखरेख की जानी चाहिये। मनुष्य की तरह पशु भी बरसात के दिनों में विभिन्न रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील होते है और मवेशियों को इस मौसम में पाचन से सम्बन्धित रोग का अधिक प्रकोप होता है। इस मौसम में भूसा, हरा-चारा, दाना, दलिया एवं चोकर इत्यादि में फफूंद का प्रकोप हो जाता है एवं नदियो तालाब का पानी कीटाणुओ तथा विभिन्न प्रकार के परजीवियों से प्रदूषित हो जाता है। पशुओं के इस प्रदूषित चारे दाने एवं पानी के सेवन से पाचन से संबन्धित बीमारियां हो जाती है, जिससे दूध आदि का उत्पादन प्रभावित होता है। कीट और मक्खियों को नियंत्रित करने के लिए शेड में कीटाणुनाशक का छिड़काव होना चाहिये। बाढ़ ग्रसित क्षेत्रों में, जानवरों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की अग्रिम योजना स्थानीय अधिकारियों के परामर्श से की जानी चाहिये।

बरसात के समय हरी घास में अधिक नमी और कम फाइबर होता है जो दूध में वसा की कमी और पतला मल होने का कारण बनता है। इन समस्याओं से बचने के लिए हरी घास के साथ पर्याप्त सूखा चारा उपलब्ध कराना चाहिये। चारे से इन मवेशियों में विषाक्तता न फैले इस बात की ओर विशेष ध्यान देने की जरुरत है।

- बाढ़ के कारण होने वाले रोगों की रोकथाम
- टूटे बिजली के तारों को ठीक कराना
- मवेशियों के टूटे घरों की मरम्मत
- सांप वगैरह से बचाव

पशु आहार की मांग का सही अंदाजा

सबसे पहले बाढ़ क्षेत्र में बाढ़ की चपेट में आने वाले पशुओं की तादाद का अंदाजा लगाना जरूरी है, ताकि उन के आहार की मांग को ढंग से पूरा किया जा सके। पहले पशुओं को उनकी प्रजातियों के हिसाब से अलग कर लेना चाहिए, फिर उन के शरीर और उत्पादन के हिसाब से उन के चारे व दाने की मांग का अंदाजा लगाना चाहिए, ताकि सभी पशुओं को सही आहार मिल सके।

सेहत व हिफाजत के इंतजाम

अगर पशुओं के रहने की जगह भी बाढ़ से तबाह हो गई हो, तो संक्रामक रोगों को फैलने से रोकने के उपाय तेज गति से करने चाहिए। बाढ़ के दौरान कई दिनों तक पानी भरे रहने और पशुओं के उस में खड़े रहने की वजह से खुर का गलना, लंगड़ापन, सांस के रोग व मांसपेशी में तनाव वगैरह होने का खतरा बना रहता है।

ऐसे में इलाज में कोताही नहीं होनी चाहिए. बाढ़ के माहौल में किसी भी किस्म के कीटनाशक वगैरह को किसी महफूज जगह पर रखना चाहिए, ताकि ऐसी चीजें पानी में न मिल सकें वरना पानी जहरीला हो सकता है। बाढ़ की हालत में पशुओं को किसी ऊंची जगह पर बांध देना चाहिए। इसके अलावा दुधारू पशुओं से प्रतिदिन दूध निकालना चाहिए, ताकि थनैला से बचा जा सके।

पानी का इंतजाम

बाढ़ के समय साफ पानी की कमी पशुओं को गंदा पानी पीने पर मजबूर कर देती है, जिससे कि कई तरह के रोगों के फैलने की संभावना बढ़ जाती है। लिहाजा पशुओं के लिए साफ पानी का इंतजाम करना बेहद जरूरी है। दूषित पानी को कैल्शियम कार्बोनेट से उपचारित कर के पशुओं को पीने के लिए दिया जा सकता है।

पशु आहार व्यवस्थापन

बाढ़ के समय पशुओं को दिए जाने वाले गेहूं, मक्का व धान वगैरह की जांच करना जरूरी है, क्योंकि इन में फफूंदी का

बाढ़ आने की संभावना पर पशुओं की सुरक्षा के उपाय

- पशुओं को बांध कर न रखें, उन्हें खुले में रहने दें।
- इलाके में बाढ़ की संभावना होने पर पशुओं को तुरंत ऊंची और सुरक्षित जगह पर ले जाएं।
- पशुओं को स्थानांतरित करते समय उस जगह पर सूखा चारा और पानी का पूरा प्रबंधन करें।

बाढ़ खत्म होने के बाद रखें इन बातों का ध्यान

- ध्यान रखें कि पशु गंदा पानी न पिएं।
- बाढ़ से पशु को निमोनिया, डायरिया और त्वचा रोग के लक्षण दिखें, तो नजदीकी पशु चिकित्सालय में पशु चिकित्सा अधिकारी से संपर्क करें।
- मृतक जानवरों को तुरंत पंजीकृत करने के लिए ग्राम पंचायत से संपर्क करें। स्थानीय पशु चिकित्सा अधिकारी से पशुओं के शव का पोस्टमार्टम भी जरूर कराएं, ताकि सरकारी मदद मिलने में कोई परेशानी खड़ी न हो।
- स्थानीय प्राधिकारी से बाढ़ खत्म होने का निर्देश मिलने के बाद ही मवेशियों को अपनी पुरानी जगह लेकर जाएं।
- यदि बारिश के कारण हरा सूखा चारा ज्यादा भीग न गया हो तो उन्हें थोड़ा सा सूखाकर जानवर को दें। यदि ज्यादा गीला हुआ हो तो उसे निकाल दें।

बरसात के मौसम में पशुओं के लिए जरुरी खुराक !

- पशु को बरसात में सुपाच्य संतुलित आहार दें, जिसमें 60 प्रतिशत गीला/हरा चारा व 40 प्रतिशत सूखा चारा हो।
- गाय को एक लीटर दूध उत्पादन हेतु 300 ग्राम तथा भैस को हर एक लीटर दूध उत्पादन हेतु 400 ग्राम दाने का मिश्रण देना चाहिए। साथ में रोज 30-40 ग्राम सादा नमक और 25-35 ग्राम खनिज मिश्रण खिलाना चाहिए।

स्रोतः पशु विज्ञान केंद्र, आनंद कृषि विश्वविद्यालय

असर हो सकता है, जो कई प्रकार के रोगों को बुलावा दे सकता है। फफूंदी वाले अनाजों को फौरन नष्ट कर देना चाहिए। इन्हें पशुओं को कतई नहीं खिलाना चाहिए। इसी प्रकार भंडारित चारे में भी फफूंदी का असर होने का डर रहता है। लिहाजा उसे भी खिलाने से पहले जांच करा लेना जरूरी है। अगर चारे में कवक का असर हो तो उसे जला देना चाहिए।

चारागाहों में कई-कई दिनों तक पानी भरा रहने से घासों के गलने व सड़ने का पूरा खतरा रहता है। ऐसे में पशुओं को चारागाहों में चरने के लिए नहीं भेजना चाहिए। आमतौर पर

चारा देने वाले पेड़ बाढ़ से बचे रहते हैं, लिहाजा उनसे मिलने वाले चारे को पशुओं को खिलाया जा सकता है। बाढ़ के समय पशुओं को उन की निम्नतम मांग के लिए हिसाब से खिलाना चाहिए।

बाढ़ के दौरान व उसके बाद पशुआहार मंगाना

बाढ़ के कारण ज्यादातर पशु आहार गंदे पानी से खराब होने के कारण पशुओं को खिलाने लायक नहीं रहते हैं। ऐसी हालत में पास के राज्यों से जहां बाढ़ का कहर न हो, पशुआहार मंगाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है। दाने ज्यादा जगह नहीं घेरते लिहाजा उन्हें दूसरे सूबों से मंगाना आसान होता है, जबकि भूसा ज्यादा जगह लेता है, लिहाजा उसे मंगाना महंगा पड़ता है।

भारत में अलग-अलग जलवायु होने के कारण कई बार बाढ़ का आना आम बात है। बाढ़ आने पर पहले इंसानों को बचाया जाता है। इसके बाद पशुओं पर ध्यान जाता है। नतीजतन पशुओं का काफी नुकसान हो जाता है। ऐसे मौके पर मरने वाले पशुओं को जला कर निबटाना जरूरी होता है, वरना संक्रमण का खतरा हो सकता है। बाढ़ के बाद फैलने वाले रोगों के संक्रमण से भी पशुओं को बचाने के पूरे इंतजाम करने चाहिए जिस से कि कम से कम नुकसान हो। □□

1 वैज्ञानिक (पशुपालन) कृषि विज्ञान केंद्र, गाजियाबाद
2 वरिष्ठ वैज्ञानिक (पशुपालन) राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

अगर पशु ने खाया विषाक्त चारा,
सताएंगे उसे दस्त, बदहज़मी और अफारा।
AYURVET
आयुर्वेट के उत्पाद, पाचन समस्याओं से दिलाएं निदान
डायरोक
ड्राई सस्पेंशन
दस्त की शीघ्र एवं प्रभावी रोकथाम के लिए
विशेषताएं
दस्त की शीघ्र रोकथाम करे
पतले गोबर को ठीक करे
पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए
सेवनविधि
30 ग्राम, पांच गुना पानी में अच्छी तरह मिलाकर पशुओं को दिन में दो बार पिलाएं
गंभीर स्थिति में हर 6 घंटे के बाद पिलाएं
पैक
30 ग्राम
1 किलोग्राम
पचोप्लस
बोलस
अपाचन व अरुचि में प्रभावशाली
विशेषताएं
पाचन क्रिया को सुदृढ़/सुचारू करे
बुखार व संक्रामक रोगों के कारण कम हुई भूख को ठीक करे
पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों की संख्या बढ़ाने तथा उनके विकास के लिए रुमैन पी.एच. को नियंत्रित करे
सेवनविधि
दो बोलस दिन में दो बार, 2-3 दिनों तक अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें।
पैक
4 बोलस की एक स्ट्रिप
अफानिल
इमलशन
अफारा की परेशानी से राहत के लिए
विशेषताएं
पशु के पेट (रुमैन) में बने अफारा एवं झाग को कम करे
पशु के पेट (रुमैन) में रूकी गैस को जल्द बाहर निकाले
पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए
सेवनविधि
50 मि.ली. दिन में दो बार, 2 दिनों तक पिलाये अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें
पैक
100 मि.ली.

आयुर्वेट पशु स्वास्थ्य संसार

खोज खबर

कोरोना काल में इम्युनिटी बढ़ाने के लिए अमूल ने लॉन्च की हल्दी आइस्क्रीम

कोरोना काल में हर कोई इम्युनिटी बढ़ाने की कवायद में जुटा है और इसी को ध्यान में रखकर तमाम डेरी कंपनियां धड़ाधड़ा अलग-अलग डेरी प्रोडक्ट लॉन्च कर रही हैं। इसी कड़ी में अमूल डेरी ने ग्राहकों के लिए हल्दी आइसक्रीम (Amul Haldi Ice Creame) मार्केट में उतारी है। अमूल की हल्दी आइसक्रीम में हल्दी और दूध के अलावा आपको शहद, काली मिर्च, खजूर, काजू और बादाम का भी स्वाद मिलेगा। इससे पहले अमूल हल्दी वाला दूध (Haldi doodh of amul) लॉन्च कर चुका है, इसके अलावा अमूल ने जिंजर मिल्क और तुलसी दूध भी लॉन्च किया था।

अमूल ने इस बारे में ट्वीट करके ग्राहकों को बताया है, ''इस आइस्क्रीम को आप एंज्वाय तो करेंगे ही साथ ही में ये आपके स्वास्थ्य के लिए भी काफी फायदेमंद है। इसमें कई फायदे वाले इंग्रीडियंट का इस्तेमाल किया गया है। जैसे हल्दी, बादाम, दूध, शहद। कंपनी ने कहा हल्दी दूध के गुण और आइस्क्रीम का मजा अब एक साथ लें।''

दुग्ध महासंघ ने इम्युनिटी बढ़ाने के लिए तुलसी, अश्वगंधा, कालीमिर्च और लौंग दूध लॉन्च किया

कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कर्नाटक दुग्ध महासंघ ने (KMF) ने आयुर्वेदिक औषधियों से युक्त नए डेरी प्रोडक्ट्स बाजार में उतारे हैं। कर्नाटक दुग्ध महासंघ ने तुलसी दूध, अश्वगंधा दूध, कालीमिर्च दूध, लौंग दूध और अदरक दूध की 200 एमएल की बोतल

मार्केट में लॉन्च की हैं। कर्नाटक दुग्ध महासंघ का दावा है कि यह नए उत्पाद लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होंगे। इनका मूल्य 25 रुपये रखा गया है, लेकिन शुरूआती मूल्य के रूप में फिलहाल इन्हें 20 रुपये में बेचा जा रहा है। कर्नाटक दुग्ध महासंघ के चेयरमैन बालचंद्र जारकीहोली ने कहा कि फिलहाल कोरोना की कोई दवा उपलब्ध नहीं है। ऐसे में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना जरूरी है। आयुर्वेद के अनुसार इन नए मिल्क फ्लेवर में इस्तेमाल की गई जड़ी-बूटियां रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती हैं। जाहिर है कि पिछले महीने कर्नाटक दुग्ध महासंघ ने हल्दी दूध के नाम से एक उत्पाद बाजार में उतारा था। इसके अलावा महासंघ ने रागी से बने उत्पाद खारा पोंगल, मीठा पोंगल और पायसा भी बाजार में उतारे हैं।

हिमाचल में सेब किसानों पर संकट, कोरोना से हुई मजदूरों की कमी, अब फंगल बीमारी का हमला

हिमाचल प्रदेश में सेब उगाने वाले किसानों पर दोहरी मार पड़ी है। पहले ही ये कोरोना महामारी के कारण मजदूरों की अभूतपूर्व कमी से जूझ रहे हैं और अब एक और संकट की चपेट में आ गए हैं। दरअसल वे अब सेब की स्कैब बीमारी को लेकर परेशान है। सेब की स्कैब एक पौधे की बीमारी है जो कवक वेंचुरिया इनएक्वॉलिस के कारण होती है। मंडी और कुल्लू जिलों में सेब के बागों में शुरू में स्कैब की सूचना मिली थी। लेकिन जैसे-जैसे कटाई का मौसम बढ़ता जा रहा है, यह फैलता गया है। बागवानी विभाग के अधिकारियों ने पुष्टि की

कि शिमला में रोहड़ू, जुब्बल-कोटखाई, चौपाल और कोटगढ़ बेल्ट में 1000 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में फंगल संक्रमण फैल गया है। सेब की स्कैब बीमारी में फल पर काले धब्बे हो जाते हैं और इसकी गुणवत्ता बिगड़ जाती है। फंगस सेब को संक्रमित करता है, तो काले धब्बे पहले पत्तियों पर और बाद में फलों पर दिखाई देते हैं।

काला गेहूं
किसान के लिए सोना, कर दिया मालामाल

काले गेहूं में सामान्य गेहूं की तुलना में लगभग 60 प्रतिशत अधिक आयरन एकाग्रता होता है। हालांकि प्रोटीन, पोषक तत्व और स्टार्च की मात्रा समान रहती है। भारत में आमतौर पर काले गेहूं की खेती नहीं होती, मगर मध्य प्रदेश में धार जिले के एक किसान ने काले गेहूं की फसल उगाई है। विनोद चौहान नामक किसान ने रबी सीजन में काले गेहूं की फसल की। खास बात ये है कि उनके इस विशेष गेहूं की मांग 12 राज्य कर रहे हैं, जिससे ये गेहूं उनके लिए सोना साबित हो रहा है। विनोद ने परंपरागत खेती के बजाय नए तरीके से खेती करके स्पेशल फसल तैयार की है। काला गेहूं एक दुर्लभ फसल है। मगर विनोद ने इस फसल की खेती पूरे 20 बीघा जमीन पर की है। उन्होंने 500 किलो काले गेहूं की बुवाई की थी, जिससे 200 क्विंटल फसल की पैदावार हुई है। जहां तक कीमत का सवाल है तो विनोद को इसकी सामान्य गेहूं के मुकाबले दोगुनी कीमत मिलेगी। विनोद काले गेहूं की खेती यूट्यूब से सीखी। दरअसल वे अलग तरह से कुछ नया करना चाहते थे और यूट्यूब पर उन्हें काले गेहूं की खेती की जानकारी मिली। हालांकि उन्होंने खेती से पहले कृषि विशेषज्ञों से जानकारी हासिल की। इसके बाद इस दुर्लभ खाद्य उत्पाद की खेती की शुरुआत की। दूसरे आश्चर्य की बात ये है कि अभी तक कृषि विभाग ने भी काले गेहूं की खेती नहीं की है। विनोद अब कृषि विभाग को इस खास फसल की जानकारी देंगे।

उत्तर प्रदेश में इस साल 50 लाख टन गुड़ का उत्पादन -कारोबारी संगठन

उत्तर प्रदेश ने इस साल चीनी के उत्पादन का जहां नया रिकॉर्ड बनाया है, वहीं गुड़ का उत्पादन भी राज्य में उम्मीद से ज्यादा हुआ है। कारोबारी संगठन का अनुमान है कि पूरे उत्तर प्रदेश में इस साल गुड़ का उत्पादन करीब 50 लाख टन है, जो औसत सालाना उत्पादन 45 लाख टन से 11 फीसदी ज्यादा है। गुड़ का उत्पादन कुटीर एवं लघु उद्योग के अंतर्गत आता है और इस साल कोरोना काल में भी गुड़ का उत्पादन चालू था। चीनी उद्योग संगठनों के अनुसार, लॉकडाउन के कारण गुड़ व खांड सारी यूनिट जल्दी बंद होने के कारण चीनी मिलों में गन्ने की आवक बढ़ जाने से इस साल उत्तर प्रदेश में चीनी का उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। चीनी मिलों का संगठन इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) द्वारा दो जून को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार चालू पेराई सीजन 2019-20 (सितंबर-अक्टूबर) में 31 मई तक उत्तर प्रदेश में 125.46 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ जोकि राज्य में रिकॉर्ड है।

पश्चिम बंगाल सरकार फसल नुकसान के आकलन के लिए इसरो की रिमोट सेंसिंग तकनीक का सहारा लेगी

पश्चिम बंगाल सरकार ने किसानों के लिए फसल बीमा दावे के निपटारे की प्रक्रिया में तेजी लाने के मकसद से फसलों को हुए नुकसान का आकलन करने में इसरो के आंकड़ा संग्रहण प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने का निर्णय किया है। इससे खरीफ मौसम के दौरान फसलों को यदि कोई नुकसान होता है तो इसका पता लगाने के लिए वह अपने दूर संवेदी उपग्रह डेटा संग्रहणकर्ता प्रौद्योगिकी को लगा सकेगा। □□

आयुर्वेट डेस्क

मधुमक्खी पालन : ऐसे करें

-डा. देवेन्द्र कुमार राणा

कृषि क्रियाएं लघु व्यवसाय से बड़े व्यवसाय में बदलती जा रही हैं। कृषि और बागवानी उत्पादन बढ़ रहा है। जबकि कुल कृषि योग्य भूमि घट रही है। कृषि के विकास के लिए फसल, सब्जियां और फलों के भरपूर उत्पादन के अतिरिक्त दूसरे व्यवसायों से अच्छी आय भी जरुरी है। मधुमक्खी पालन एक ऐसा ही व्यवसाय है, जो मानव जाति को लाभान्वित कर रहा है यह एक कम खर्चीला घरेलू उद्योग है जिसमें आय, रोजगार व वातावरण शुद्ध रखने की क्षमता है। यह एक ऐसा रोजगार है, जिसे समाज के हर वर्ग के लोग अपना कर लाभान्वित हो सकते हैं।

मधुमक्खी पालन कृषि व बागवानी उत्पादन बढ़ाने की क्षमता भी रखता है। मधुमक्खियां मोन समुदाय में रहने वाली कीटों वर्ग की जंगली जीव हैं। इन्हें उनकी आदतों के अनुकूल कृत्रिम ग्रह (हईव) में पाल कर उनकी वृद्धि करने, शहद एवं मोम आदि प्राप्त करने को मधुमक्खी पालन या मौन पालन कहते है। शहद एवं मोम के अतिरिक्त अन्य पदार्थ, जैसे गोंद (प्रोपोलिस, रायल जेली, डंक-विष) भी प्राप्त होते है। साथ ही मधुमक्खियों से फूलों में परांगन होने के कारण फसलों की उपज में लगभग एक चौथाई अतिरिक्त बढ़ोतरी हो जाती है।

मधुमक्खी परिवार: एक परिवार में एक रानी कई हजार कमेरी तथा 100-200 नर होते है ।

रानी: यह पूर्ण विकसित मादा होती है एवं परिवार की जननी होती है। रानी मधुमक्खी का कार्य अंडे देना है। अच्छे पोषण वातावरण में एक इटैलियन जाति की रानी एक दिन में 1500-1800 अंडे देती है तथा देशी मक्खी करीब 700-800 अंडे देती है। इसकी उम्र औसतन 2-3 वर्ष होती है।

कमेरी/श्रमिक : यह अपूर्ण मादा होती है और मौनगृह के सभी कार्य जैसे अण्डों, बच्चों का पालन पोषण करना, फलों तथा पानी के स्रोतों का पता लगाना, पराग एवं रस एकत्र करना, परिवार तथा छतों की देखभाल, शत्रुओं से रक्षा करना इत्यादि इसकी उम्र लगभग 2-3 महीने होती है।

नर मधुमक्खी/निखट्टू: यह रानी से छोटी एवं कमेरी से बड़ी होती है। रानी मधुमक्खी के साथ सम्भोग के सिवा यह कोई कार्य नही करती। सम्भोग के तुरंत बाद इनकी मृत्यु हो जाती है और इनकी औसत आयु करीब 2-3 दिन की होती है।

मधुमक्खियों की किस्में

भारत में मुख्यतः मधुमक्खी की चार प्रजातियाँ पाई जाती हैं

छोटी मधुमक्खी (एपिस फ्लोरिय), भैंरो या पहाड़ी मधुमक्खी (एपिस डोरसाटा), देशी मधुमक्खी (एपिस सिराना इंडिका) तथा इटैलियन या यूरोपियन मधुमक्खी (एपिस मेलिफेरा)। इनमें से एपिस सिराना इंडिका व एपिस मेलिफेरा जाति की मधुमक्खियों को आसानी से लकड़ी के बक्सों में पला जा सकता है। देशी मधुमक्खी प्रतिवर्ष औसतन 5-10 किलोग्राम शहद प्रति परिवार तथा इटैलियन मधुमक्खी 50 किलोग्राम तक शहद उत्पादन करती हैं।

मधुमक्खी पालन के लिए आवश्यक सामग्री

मौन पेटिका, मधु निष्कासन यंत्र, स्टैंड, छीलन छुरी, छत्ताधार, रानी रोक पट, हाईवे टूल (खुरपी), रानी रोक द्वार, नकाब, रानी कोष्ठ रक्षण यंत्र, दस्ताने, भोजन पात्र, धुआंकर और ब्रुश।

मधुमक्खी परिवार का रखरखाव व प्रबंधन

मधुमक्खी परिवारों की सामान्य गतिविधियाँ 100 और 380 सेंटीग्रेट के बीच में होती हैं। उचित प्रबंध द्वारा प्रतिकूल परिस्थितियों में इनका बचाव आवश्यक हैं। उत्तम रखरखाव से परिवार शक्तिशाली एवं क्रियाशील बनाये रखे जा सकते हैं।

मधुमक्खी परिवार को विभिन्न प्रकार के रोगों एवं शत्रुओं का प्रकोप समय-समय पर होता रहता है। इनका निदान उचित प्रबंधन द्वारा किया जा सकता है। इन स्थितियों को ध्यान में रखते हुए निम्न प्रकार वार्षिक प्रबंधन करना चाहिये।

शरद ऋतु में मधुवाटिका का प्रबंधन

शरद ऋतु में विशेष रूप से अधिक ठंड़ पड़ती है। इससे तापमान कभी-कभी 10 या 20 सेन्टीग्रेट से नीचे तक चला जाता है। ऐसे में मौन वंशों को सर्दी से बचाने के लिए टाट की बोरी की दो तह बना आंतरिक ढक्कन के नीचे बिछा दें। यह कार्य अक्टूबर में करें। इससे मौन गृह का तापमान एक समान गर्म बना रहता है। पोलीथिन से प्रवेश द्वार को छोड़ पूरे बक्से को ढक दें या घास फूस या पुवाल का छापर टाट बना कर बक्सों को ढक दें। इस समय मौन गृहों को दिन भर धूप वाली सुखी जमीं पर रखें। इससे मधुमक्खियाँ अधिक समय तक कार्य करेगी। अक्टूबर में देख ले कि रानी अच्छी हो तथा एक साल से अधिक पुरानी न हो यदि ऐसा है तो उस वंश को नई रानी दे दें। इससे मौन वंश कमजोर न हो। शीतलहर क्षेत्र में निश्चित करे कि मौन गृह में आवश्यक मात्रा में शहद और पराग हों ।

शहद कम या न होने पर मौन वंशों को 50-50 अनुपात में चीनी व पानी का घोल बनाकर उबालकर ठंडा होने के पश्चात् मौन गृहों के अंदर रखें, ताकि मौनों को भोजन की कमी न हो। सर्दी से बचाव हेतु पुराने या टूटे मौन गृह की मरम्मत अक्टूबर-नवम्बर तक अवश्य करा लें। कम समय में अधिक से अधिक मकरंद और पराग के लिए मौन वंशो को फूल वाले स्थान पर रखें। शिशु मक्खियों को मरने से बचाने के लिए ठंड़ में मौन गृहों को खोलें। साथ ही श्रमिक मधुमक्खियाँ डंक मरने लगती है। पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक ऊंचाई वाले स्थानों पर गेहूं के भूसे या धान के पुवाल से अच्छी तरह मौन गृह को ढक देना चाहिए।

बसंत ऋतु में मौन प्रबंधन

बसंत ऋतु मधुमक्खियों और मौन पालको के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। इस समय सभी स्थानों में पर्याप्त मात्रा में पराग और मकरंद उपलब्ध रहते हैं। इससे मौनों की संख्या दुगनी बढ़ जाती है। फलतः शहद का उत्पादन भी बढ़ जाता है। इस समय देख रेख की आवश्यकता उतनी ही पड़ती है, जितनी अन्य मौसमों में होती है। शरद ऋतु समाप्त होने पर धीरे धीरे मौन गृह की पैकिंग (टाट, पट्टी और पुरल के छापर इत्यादि) हटा दें। मौन गृहों को खाली कर उनकी अच्छी तरह से सफाई करें।

पेंदी पर लगे मौन को भली-भांति खुरच कर हटा दें। तापमान कम करने हेतु मौन गृहों पर बाहर से सफेद पेंट करें। प्रारंभ में मौन वंशों को कृत्रिम भोजन देने से उनकी संख्या और क्षमता बढ़ती है, ताकि अधिकतम उत्पादन लिया जा सके। रानी यदि पुरानी हो गई हो तो उसे मारकर अंडे वाला फ्रेम दे दें। इससे दूसरे वाला सृजन शुरू कर दे। यदि मौन गृह में मौन की संख्या बढ़ गयी हों, तो मोम लगा हुआ अतिरिक्त फ्रेम देना चाहिए, जिससे मधुमक्खियाँ छत्ते बना सके। यदि छत्तों में शहद भर गया हो तो मधु निष्कासन यंत्र से शहद को निकालें। इससे मधुमक्खियां अधिक क्षमता के साथ कार्य कर सके। यदि नरों की संख्या बढ़ गयी हो तो नर प्रपंच लगा कर इनकी संख्या को नियंत्रित करें।

ग्रीष्म ऋतु में मौन प्रबंधन

ग्रीष्म ऋतु में मौनों की देख भाल ज्यादा जरुरी होता है। 400 सेंटीग्रेट तापमान से ऊपर वाले क्षेत्रों में मौन गृहों को किसी छायादार स्थान पर रखें। सुबह की सूर्य की रोशनी मौन गृहों पर पड़े, ताकि मधुमक्खियाँ सुबह से ही सक्रिय होकर अपना कार्य प्रारम्भ कर सके। बरसीम व सूर्यमुखी इत्यादि की खेती वाले क्षेत्रों में मधुस्राव का समय भी हो सकता है, जिससे शहद उत्पादन किया जा सकता है। इस समय मधुमक्खियों को साफ और बहते हुए पानी की जरूरत होती है। अतः पानी की उचित व्यवस्था मधुवातिका के पास करें। सीधे गर्म हवा व लू से मौनों को बचाने के लिए छप्पर प्रयोग करें। अतिरिक्त फ्रेम को बाहर निकलकर उचित भण्डारण करें, जिससे मोमी पतंगा के प्रकोप से बचाया जा सके। मौन वाटिका में छायादार स्थान न होने पर बक्से के ऊपर छप्पर या पुआल डालकर उसे सुबह शाम भिगोते रहे। कृत्रिम भोजन के रूप में 50-50 अनुपात में चीनी और पानी को उबल कर ठंडा होने पर मौन गृह के अंदर कटोरी या फीडर में रखें। मौन गृह के स्टैंड की कटोरियों में प्रतिदिन साफ

और ताजा पानी डालें। मौनों की संख्या ज्यादा बढ़ने पर अतिरिक्त फ्रेम डालें।

वर्षा ऋतु में मौन प्रबंधन

वर्षा ऋतु में तेज वर्षा, हवा और शत्रुओं जैसे चींटियाँ, मोमी पतंगा, पक्षियों का प्रकोप होता है। मोमी पतंगों के प्रकोप को रोकने के लिए छतों को हटा दें। फ्लोर बोड को साफ करे। गंधक पाउडर छिड़के। चीटों की रोकथाम के लिए स्टैंड को पानी भरे बर्तन में रखे। पानी में दो तीन बूंदें काले तेल की डाले। मोमी पतंगों से प्रभावित छत्ते, पुराने काले छत्ते एवं फफूंद लगे छत्तों को निकल कर अलग कर दें।

मधुमक्खी परिवारों का विभाजन एवं जोड़ना

विभाजन:-अच्छे मौसम में मधुमक्खियों की संख्या बढ़ती है, तो मधुमक्खी परिवारों का विभाजन करना चाहिये। ऐसा न होने पर मक्खियाँ घर छोड़कर भाग सकती है। विभाजन के लिए मूल परिवार के पास दूसरा खाली बक्सा रखे तथा मूल मधुमक्खी परिवार से 50 प्रतिशत ब्रूड, शहद व पराग वाले फ्रेम रखे। रानी वाला फ्रेम भी नये बक्से में रखे। मूल बक्से में यदि रानी कोष्ठ हो तो अच्छा है, अन्यथा कमेरी मक्खियाँ स्वयं रानी कोष्ठक बना लेगी तथा 16 दिन बाद रानी बन जाएगी। दोनों बक्सों को रोज एक फीट एक दूसरे से दूर करते जाये और नया बक्सा तैयार हो जायेगा।

जोड़ना: जब मधुमक्खी परिवार कमजोर हो और रानी रहित हो तो ऐसे परिवार को दूसरे परिवार में जोड़ दिया जाता है। इसके लिए एक अखबार में छोटे-छोटे छेद बनाकर रानी वाले परिवार के शिशु खण्ड के ऊपर रख लेते है। मिलाने वाले परिवार के फ्रेम एक सुपर में लगाकर इसे रानी वाले परिवार के ऊपर रख दिया जाता है। अखबार के ऊपर थोड़ा शहद छिड़क दिया जाता है। इससे 10-12 घंटों में दोनों परिवारों की गंध आपस में मिल जाती है। बाद में सुपर और अखबार को हटाकर फ्रेमों को शिशु खण्ड में रखा जाता है।

मधुमक्खी परिवार स्थानान्तरण

मधुमक्खी परिवार का स्थानान्तरण करते समय निम्न सूचनाएं ध्यान रखें-

- स्थानांतरण की जगह पहले से ही सुनिश्चित करें ।
- स्थानांतरण की जगह दूरी पर हो तो मौन गृह में भोजन का पर्याप्त व्यवस्था करें ।
- प्रवेश द्वार पर लोहे की जाली लगा दें तथा छत्तों में अधिक शहद हो तो उसे निकल लें और बक्सों को बोरी से कील लगाकर सील कर दें।
- बक्सों को गाड़ी में लम्बाई की दिशा में रखें तथा परिवहन में कम से कम झटके लें, ताकि छत्ते में क्षति न पहुचे ।
- गर्मी में स्थानान्तरण करते समय बक्सों के ऊपर पानी छिड़कते रहे और यात्रारत के समय ही करें।
- नई जगह पर बक्सों को लगभग 8-10 फुट की दूरी पर तथा मुंह पूर्व-पश्चिम दिशा की तरफ रखें।
- पहले दिन बक्सों का निरीक्षण न करें। दूसरे दिन धुंआ देने के बाद मक्खियों की जाँच कर सफाई कर देनी चाहिए।

शहद व मोम निष्कासन व प्रसंस्करण

मधुमक्खी पालन का मुख्य उद्देश्य शहद एवं मोम उत्पादन करना होता है। बक्सों में स्थित छत्तों में 75-80 प्रतिशत कोष्ठ मक्खियों द्वारा मोमी टोपी से बंद कर देने पर उनसे शहद निकाला जाए। इन बंद कोष्ठों से निकाला गया शहद परिपक्व होता है। बिना मोमी टोपी के बंद कोष्ठों का शहद अपरिपक्व होता है। इनमें पानी की मात्रा अधिक होती है। मधु निष्कासन कार्य साफ मौसम में दिन में छत्तों के चुनाव से आरंभ कर शाम के समय शहद निष्कासन प्रक्रिया आरभ करें। अन्यथा मक्खियाँ इस कार्य में बाधा उत्पन्न करती है।

शहद से भरे छत्तों को बक्से में रख ऐसे सभी बक्सों का कमरे या खेत में बड़ी मच्छरदानी के अंदर रख मधु निष्कासन करें। अब छीलन चाकू को गर्म पानी में डुबोकर एवं कपड़े से पोंछकर चाटते से मोम की टोपियाँ हटा दें। छत्ते को शहद निकलने वाली मशीन में रख यंत्र को घुमाकर बारी-बारी से छत्तों को पलटकर दोनों ओर से शहद निकला जाता है। इस शहद को मशीन से निकालकर टंकी में लगभग 48 घंटे तक पड़ा रहने देते

है। ऐसा करने पर शहद में मिले हवा के बुलबुले तथा मोम इत्यादि शहद की ऊपरी सतह पर तथा मैली वस्तुएं पेंदी पर बैठ जाती है। शहद को पतले कपड़े से छानकर स्वच्छ एवं सुखी बोतलों में भरकर बेचा जा सकता है।

शहद प्रसंस्करण (घरेलू विधि)

इस प्रकार निष्कासित शहद में अशुद्धियां जैसे पानी की अधिक मात्रा, पराग, मोम एवं कीट के कुछ भाग रह सकती है। यह अशुद्धियाँ हटाने के लिए शहद का प्रसंस्करण जरुरी होता है। इसके लिए बड़े गंज में पानी रखकर गर्म किया जाता है तथा छोटे कपड़े से छान शहद रखते है। शहद को चम्मच द्वारा हिलाते रहे, ताकि सारा शहद एक समान गर्म हो जब शहद 600 सेन्टीग्रेट तक गर्म हो जाए तब शहद वाले बर्तन पानी वाले बर्तन से अलग कर देते है। इस गर्म किये गए शहद को बारीक छलनी द्वारा छानकर टोंटी लगे स्टील के ड्रम में भर देते है। जब शहद ठंडा हो जाये, तो उसके ऊपर जमी मोम की परत को करछी से हटा कर टोंटी द्वारा शहद को बोतलों में भरें।

मोम का निष्कासन एवं प्रसंस्करण

पुराने छत्तों से मोम काटकर उबलते पानी में डालकर पिघला लेते है। ऊपर तैरते हुए मोम को निकल लिया जाता है। इस मोम को साफ करने हेतु 2-3 बार शहद पानी में पिघलाकर ठंडा कर लेते है। प्रत्येक बार जमे हुए मोम की तलहटी पर लगी गन्दी चाकू से काटकर अलग करते रहना चाहिए।

मधुमक्खियों के भोजन स्त्रोत

जनवरीः सरसों, तोरियाँ, कुसुम, चना, मटर, राजमा, अनार, अमरुद, कटहल, यूकेलिप्टस इत्यादि।

फरवरीः सरसों, तोरियाँ, कुसुम, चना, मटर, राजमा, अनार, अमरुद, कटहल, यूकेलिप्टस, प्याज, धनिया, शीशम इत्यादि।

मार्चः कुसुम, सूर्यमुखी, अलसी, बरसीम, अरहर, मेथी, मटर, भिन्डी, धनियाँ, आंवला, निम्बू, जंगली जलेबी, शीशम, यूकेलिप्टस, नीम इत्यादि।

अप्रैलः सूरजमुखी, बरसीम, अरण्डी, रामतिल, भिन्डी, मिर्च, सेम, तरबूज, खरबूज, करेला, लोकी, जामुन, नीम, अमलतास इत्यादि।

मईः तिल, मक्का, सूरजमुखी, बरसीम, तरबूज, खरबूज, खीरा, करेला, लोकी, इमली, कद्दू, करंज, अर्जुन, अमलतास इत्यादि।

जूनः तिल, मक्का, सूरजमुखी, बरसीम, तरबूज, खरबूज, खीरा, करेला, लोकी, इमली, कद्दू, बबुल, अर्जुन, अमलतास इत्यादि।

जुलाईः ज्वार, मक्का, बाजरा, करेला, खिरा, लोकी, भिन्डी, पपीता इत्यादि।

अगस्तः ज्वार, मक्का, सोयाबीन, मूंग, धान, टमाटर, बबुल, आंवला, कचनार, खीरा, भिन्डी, पपीता इत्यादि।

सितम्बरः बाजरा, सनई, अरहर, सोयाबीन, मूंग, धान, रामतिल, टमाटर, बरबटी, भिन्डी, कचनार, बेर इत्यादि।

अक्टूबरः सनई, अरहर, धान, अरण्डी, रामतिल, यूकेलिप्टस, कचनार, बेर, बबूल इत्यादि।

नवम्बरः सरसों, तोरियां, मटर, अमरुद, सहजन, बेर, यूकेलिप्टस, बोटलब्रश इत्यादि।

दिसम्बरः सरसों, तोरियाँ, राइ, चना, मटर, यूकेलिप्टस, अमरुद इत्यादि।

मधुमक्खियों की बीमारियों और उसकी शत्रु मधुमक्खियों के सफल प्रबंधन के लिए यह आवश्यक है कि उनमें लगने वाली बीमारियों और उनके शत्रुओं के बारे में पूर्ण जानकारी होनी आवश्यक है। इससे उनसे होने वाली क्षति को बचाकर शहद उत्पादन और आय में आशातीत बढ़ोतरी की जा सकती है। मधुमक्खी एक सामाजिक प्राणी होने के कारण यह समूह में रहती है। इससे इनमें बीमारी फैलाने वाले सूक्ष्म जीवों का संक्रमण बहुत तेजी से होता है। इनके विषय में उचित जानकारी के माध्यम से इससे अपूरणीय क्षति हो सकती है। बीमारियों के अलावा इनके अनेकों शत्रु होते हैं, जो सभी रूप से मौन वंशो को नुकसान पहुंचाते है। □□

विशेषज्ञ (पादप सुरक्षा) कृषि विज्ञान केंद्र (राष्ट्रीय बागवानी अनुसन्धान एवं विकास प्रतिष्ठान), उजवा, नई दिल्ली-110073
दूरभाषः 011-65638199

नया भूसा कितना फायदेमंद

-डॉ. संजीव कुमार वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक

हरबीसाइड, इंसैक्टिसाइड और पैस्टिसाइड के कारण बड़े पशुओं का गोबर पतला हो सकता है। छोटे पशुओं को दस्त लग सकते हैं। दुधारू पशुओं का दूध उत्पादन घट सकता है और उन की प्रजनन क्षमता पर बुरा असर पड़ सकता है।

किसान अक्सर यह शिकायत करते मिल जाते हैं कि जब से उन्होंने नया भूसा खिलाना शुरू किया है, तब से कुछ पशुओं को दस्त लग गए हैं। नए भूसे में ऐसा क्या है, जिसके कारण पशु को दस्त लग जाते हैं? कुछ लोग कहते हैं कि नया भूसा गरमी करता है। गरमी-सर्दी कुछ नहीं करता, आज आप को समझाते हैं कि नए भूसे से पशुओं को दस्त क्यों लग जाते हैं।

खाद्यान्न फसलों को कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिए कई तरह के हरबीसाइड, इंसैक्टिसाइड और पैस्टिसाइड फसलों पर छिड़के जाते हैं। ये हरबीसाइड खरपतवार तो खत्म कर देते हैं और इंसैक्टिसाइड व पैस्टिसाइड फसलों को तो कीड़ों से बचा लेते हैं, मगर इन की रेजिड्यू भूसे के ऊपर लगी रह जाती है। यही भूसा जब पशु को खिलाया जाता है, तो ये हरबीसाइड, इंसैक्टिसाइड और पैस्टिसाइड पशु के पाचन तंत्र में पहुंच कर उसे डिस्टर्ब कर देते हैं और पशु को दस्त लग जाते हैं।

इन हरबीसाइड, इंसैक्टिसाइड और पैस्टिसाइड की मात्रा इतनी भी नहीं होती कि पशु मर ही जाए, मगर इतनी तो होती है कि उस का पाचन तंत्र खराब हो जाता है और उसे दस्त लग जाते हैं।

खेत में जो भी कैमिकल छिड़के जाते हैं, वे पौधे के अंदर या तो सीधे ही चले जाते हैं या फिर जब पौधा मिट्टी से अपना पोषण शामिल करता है, तो उस समय ये सब कैमिकल पौधे के अंदर चले जाते हैं। वैसे तो इन का एक समय होता है, जिसके बाद ये अपने आप ही डिऐक्टिवेट हो जाते हैं, मगर इन कैमिकल के डिऐक्टिवेट होने से पहले ही अगर वह भूसा पशुओं ने खाया तो ये सब कैमिकल उन के अंदर चले जाते हैं।

हरबीसाइड, इंसैक्टिसाइड और पैस्टिसाइड लिपोफिलिक होते हैं, जिसका मतलब है कि ये कैमिकल फैट के साथ घुलमिल जाते हैं। कभी-कभी तो पशु के अंदर इन कैमिकलों की मात्रा इतनी बढ़ जाती है कि वे लिपोफिलिक होने के चलते पशु के दूध में पाए जाने वाले फैट के साथ जुड़कर दूध तक में स्रावित होने लगते हैं और अगर पशु मांस के लिए पाला गया है, तो ये कैमिकल मांस में जमा होने लगते हैं और जब इन पशुओं का दूध या मांस कोई उपभोग करता है, तो ये कैमिकल उस को भी प्रभावित करते हैं।

एक किलोग्राम गेहूं भूसे में 1.1 मिलीग्राम से 1.2 मिलीग्राम तक एंडोसल्फान पाया गया है। ज्वार की कड़बी में 0.46 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम एंडोसल्फान पाया गया है। एंडोसल्फान दूध में तो स्रावित नहीं होता है, मगर यह पशु को जरूर प्रभावित करता है।

उत्तराखंड के कुमायूं की पहाड़ियों और तराई के क्षेत्रों से इकट्ठे किए गए दूध के नमूनों में क्लोरोपायरिफौस मैक्सिमम रेजिड्यू लिमिट से ज्यादा पाया गया।

हैदराबाद के आसपास के क्षेत्रों से इकट्ठे किए गए दूध के नमूनों में डाइमेथोएट पाया गया।

कैसे नुकसान पहुंचाते हैं

हरबीसाइड, इंसैक्टिसाइड और पैस्टिसाइड के कारण बड़े पशुओं का गोबर पतला हो सकता है। छोटे पशुओं को दस्त लग सकते हैं। दुधारू पशुओं का दूध उत्पादन घट सकता है और उन की प्रजनन क्षमता पर बुरा असर पड़ सकता है।

पशुओं के हीट में न आने की समस्या आ सकती है। गर्भवती मादाओं में गर्भपात हो सकता है। पशुओं का लिवर और किडनी तक खराब हो सकते हैं। इन कैमिकल के कारण पशु की इम्युनिटी कमजोर हो जाती है, और तो और कैंसर तक हो सकता है।

बचने के उपाय

- कैमिकल की जगह बायोपैस्टिसाइड ही उपयोग में लाए जाएं।
- अगर इन कैमिकल का उपयोग करना मजबूरी हो तो इन का छिड़काव करने के तुरंत बाद फसल को पशुओं को खाने के लिए न दिया जाए।
- नए भूसे को तुरंत ही पशुओं को खिलाना शुरू नहीं करना है, बल्कि कम से कम 2 महीने बाद ही उसे पशुओं को खाने के लिए देना है, ताकि उस के ऊपर अगर कोई कैमिकल लगा भी है, तो वह डिऐक्टिवेट हो जाए।
- अगर ताजा भूसा खिलाना मजबूरी हो तो उसे रातभर पानी में भिगोने के बाद ही पशुओं को खाने को दें। जिस पानी में भूसा भिगोया जाएगा उस में से कुछ पानी तो भूसा सोख ही लेगा और बाकी बचे पानी को फेंक दें। □□

AYURVET™

पशुपालकों की लगातार मांग पर फिर से शुरू हुआ आयुर्वेट पशु जगत रेडियो कार्यक्रम

आकाशवाणी

आपकी लगातार आती हुई मांग को देखते हुए आपका चेहता आयुर्वेट पशुजगत कार्यक्रम इस माह से फिर से आरंभ हो गया है।

इस कार्यक्रम को अब आप पूरे भारतवर्ष में कहीं भी रेडियो के साथ-साथ अब अपने मोबाइल पर भी सुन सकते हैं, जिसका विवरण निम्न प्रकार है:-

चैनल: **इंद्रप्रस्थ चैनल (819 मैगाहट्‌र्ज)**
एफएम गोल्ड (100.1 मैगाहट्‌र्ज)

दिन: **प्रति सोमवार**

समय: **सायं 5.20**

पशुजगत कार्यक्रम में किसानों को पशुपालन की उपयोगी जानकारी दी जाती है। इस कार्यक्रम में किसानों द्वारा पशुपालन संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनके उत्तर विशेषज्ञों द्वारा दिए जाते हैं। कार्यक्रम संबंधी जानकारी, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं आप अपन हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं:-

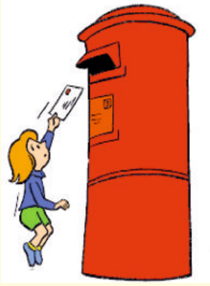

आयुर्वेट लिमिटेड,
पोस्ट बॉक्स नं. 9292,
दिल्ली-110092

AYURVET™

विषाक्त आहार हो या लंबी बीमारी, पशु के लीवर पर है बोझ भारी।
लीवर की सूजन या हो कृमियों से आहत, यकृफिट दे पशु को हर हाल में राहत।।

यकृफिट

लीवर टॉनिक

यकृफिट के उपयोग

- यकृत को क्षति से बचाने हेतु
- कमजोरी या बीमारी से उभरते हुए पशु के दुर्बल यकृत को स्वस्थ करने हेतु
- यकृत में सूजन, पीलिया, विषाक्तता, लीवर फ्लूक या अन्य पेट के कीड़ों के इलाज में सह-उपचार हेतु
- मेमने, बछड़े या बछियों के शारीरिक विकास हेतु
- कार्यक्षमता तथा दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने हेतु

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप | 500 मि.ली. | 1 लीटर

•250 मि.ली. पैक में भी उपलब्ध

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल, साथ ही आप अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्र. मेरी गाय का दूध उबालने पर फट जाता है। उसके कृत्रिम गर्भाधान को भी चार महीने हो गए हैं। क्या करें?

रमेश, बादली

उत्तर : आपके पशु के कृत्रिम गर्भाधान को चार महीने हो गए हैं। पहले तो आप उसका परीक्षण करवाएं कि वह गाभिन है या नहीं। यदि गाभिन है तो उसकी सेवा करें, परंतु यदि गाभिन नहीं है तो पशु चिकित्सा अधिकारी से उसका परीक्षण करवाकर उसका इलाज करवाएं। जहां तक दूध की बात है आपके पशु को सब-क्लीनिकल थनैला है। इसमें दूध ठीक निकलता है, उसका रंग भी साफ होता है। देखने में तो बिल्कुल ठीक लगता है, परंतु उबालने पर फट जाता है। अभी आप चारों थनों का दूध अलग-अलग निकालें। आप दूध को अलग-अलग उबालें। आप देखेंगे कि तीन थनों का दूध नहीं फटेगा और एक थन का दूध फटेगा। आप तीन थनों के दूध का इस्तेमाल करें। अभी आप अपने पशु को-

•पेट के कीड़ों की दवाई दें।

•पशु का दूध निकालने के बाद थनों को साफ पानी से साफ करें। साफ कपड़े से थनों को साफ करके उस पर दिन में दो बार समुचित मात्रा में मैस्टीलेप जैल का लेप 5 दिनों तक करें।

•आयुमिन वी-5 खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन ताउम्र खिलाएं।

प्र. मेरी गाय की प्रसूति दो महीने पहले हुई है। प्रसूति के बाद वह ठीक थी, परंतु तीन-चार दिन से कम खा रही है। क्या करें?

राजदीप, सोनीपत

उत्तर : आप अपनी गाय की जांच पशु चिकित्सा अधिकारी से करवाएं। आपको गाय की जांच के बाद पता लगेगा कि उसको बुखार है या नहीं। यदि बुखार होगा तो उसे

•इंजेक्शन स्ट्रेपटोपैंसिलिन 2.5 ग्राम आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•इंजेक्शन मैलोनैक्स प्लस 10 एमएल आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•इंजेक्शन बीकोम-एल 10 एमएल आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•मलेड़ा 15 ग्राम व गुड़ 50 ग्राम मिलाकर दिन में दो बार सात दिन खिलाएं।

अगर आपके पशु को बुखार नहीं है, तो शायद आपका पशु नेगेटिव एनर्जी बैलेंस में है। तब आप अपने पशु को :-

•इंटालाइट एक लीटर आई/वी लगवाएं। यह शायद दो-तीन दिन लगवाना पड़े।

•इंजेक्शन न्यूरोकसिन-एम 10 एमएल आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•इंजेक्शन टी-फोस 10 एमएस आई/एम तीन दिन लगवाएं।

•मलेड़ा 15 ग्राम व गुड़ 50 ग्राम मिलाकर दिन में दो बार सात दिन लगवाएं।

•कीटोरोक 200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार 2 दिनों तक दें। उसके बाद अगले 2 दिनों तक 100 मि.ली. दिन में एक बार दें।

□□

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जांच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।
AYURVET
मैस्टीलेप के फायदे
● रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं एवं थनैला से बचाएं
● स्वच्छ दूध उत्पादन में सहायक
● थन की सूजन एवं दर्द कम कर पशु को आराम दिलाएं
मैस्टीलेप 50 ग्राम, 125 ग्राम ट्यूब तथा 125 मि.ली. स्प्रे में भी उपलब्ध है।
MASTILEP
TOPICAL HERBAL GEL
FOR CONTROL OF MASTITIS
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
NOT FOR HUMAN USE
TOPICAL HERBAL SPRAY
मैस्टीलेप
मैस्टीलेप
थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल

राष्ट्रीय पोषण सप्ताह-1 से 7 सितंबर

राष्ट्रीय पोषाहार दिवस (सप्ताह) प्रतिवर्ष 1 से 7 सितंबर तक मनाया जाता है। राष्ट्रीय पोषण सप्ताह दिवस लोगों के बेहतर स्वास्थ्य और भलाई के बारे में उनको जागरुक करने के लिये मनाया जाता है। स्वास्थ्य और कल्याण का केन्द्रीय बिन्दु पोषण है। यह आपको काम करने के लिए शक्ति और ऊर्जा प्रदान करता हैं तथा तन्दुरुस्त और अच्छा महसूस करने में भी सहायता करता हैं। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, ''पोषण का संबंध शरीर की आवश्यकतानुसार आहार के सेवन को माना जाता है। वर्तमान और सफल पीढ़ियों के लिए जीवन, स्वास्थ्य और विकास का मुख्य विषय पोषण है।

पोषण शिक्षा के द्वारा अच्छे स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 1982 में केन्द्रीय सरकार द्वारा पहली बार इस अभियान की शुरुआत की गयी। राष्ट्रीय विकास के लिये मुख्य रुकावट कुपोषण है।

खाद्य और पोषण बोर्ड की 43 इकाई (महिला और बाल विभाग, स्वास्थ्य और एनजीओ) पूरे देश में कुशलता से कार्य कर रही है। पैदा हुए नवजात शिशु को एक बड़े स्तर की प्रतिरक्षा और स्वस्थ जीवन उपलब्ध कराने के लिये 6 महीनों तक माँ का दूध या नवदुग्ध के रुप में जाना जाने वाला पहला दूध अपने नवजात को पिलाने के लिये दूध पिलाने वाली माँ को बहुत प्रोत्साहित किया जाता है।

अच्छे स्वास्थ्य की आधारशिला नियमित शारीरिक गतिविधियों के साथ अच्छा पोषण है। स्वस्थ बच्चे बेहतर तरीके से सीखते हैं। पर्याप्त पोषण का सेवन करने वाले व्यक्ति अधिक कार्य करते हैं। वहीं दूसरी ओर, ख़राब पोषण प्रतिरक्षा में कमी, बीमारी के ज़ोखिम को बढ़ाने, शारीरिक और मानसिक विकास को क्षीण करने तथा कार्यक्षमता में कमी पैदा कर सकता हैं।

लक्ष्य

- समुदाय में विभिन्न पोषण और आहार की समस्या की आवृत्ति का पुनरीक्षण करना।
- गहन शोध के द्वारा पोषण संबंधी समस्याओं को नियंत्रित और बचाव के लिये उचित तकनीक का आँकलन करना।
- आहार व पोषण के लिये देश के स्थिति की निगरानी करना।
- स्वास्थ्य और पोषण के बारे में अनुकूलन प्रशिक्षण के द्वारा लोगों को जागरुक करना।

क्रिया-कलाप

राष्ट्रीय पोषण सप्ताह को पूरे सप्ताह मनाने के द्वारा विभिन्न पोषण संबंधी शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा लोगों को प्रोत्साहन दिया जाता है। फल, सब्जी और घरों के दूसरे खाद्य पदार्थों के बचाव के लिये लोगों को उचित प्रशिक्षण दिया जाता है। राष्ट्रीय पोषण सप्ताह उत्सव के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये सरकार द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय पोषण नीतियाँ चलायी जाती है। □□

8 सितम्बर-विश्व साक्षरता दिवस (यूनेस्को)

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाने की घोषणा यूनेस्को द्वारा 7 नवंबर 1965 में की गयी थी तथा 1966 से हर वर्ष अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 8 सितंबर को मनाया जाता है।

जीवन में सफलता और बेहतर जीने के लिये खाने की तरह ही साक्षरता भी महत्वपूर्ण है। साथ ही यह गरीबी उन्मूलन, बाल मृत्यु दर को कम करने, जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने, लैंगिक समानता की प्राप्ति आदि के लिए भी आवश्यक है, अतः यह दिन सतत शिक्षा प्राप्त करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने और परिवार, समाज और देश के लिए अपनी जिम्मेदारियों को समझने के लिए मनाया जाता है

''विद्या ददाति विनयम, विनयम ददाति पात्रता'' अर्थात् विद्या व्यक्ति को विनय प्रदान करती है और विनय ही आपको पात्र व्यक्ति बनाता है।

साक्षरता दिवस केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में मनाया जाता है, हमारे देश में साक्षरता बढ़ाने के लिए समय समय पर विभिन्न प्रयास किये जाते रहे हैं। सर्व शिक्षा अभियान, मिड डे मील योजना, प्रौढ़ शिक्षा योजना, राजीव गाँधी साक्षरता मिशन आदि चलाये जाते रहे हैं। आजकल तो ग्रामीण क्षेत्रों से लड़कियां बड़े शहरों में पढ़ने के लिए जाने लगीं हैं, क्योंकि एक शिक्षित महिला ही पूरे परिवार को शिक्षित और समृद्ध बना सकती है । □□

AYURVET
जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी
महीने में दें
सात दिन
दूध पायें
रात दिन
रुचामैक्स
दूर करे परेशानी
RUCHAMAX
APPETITE STIMULANT & DIGESTIVE TONIC
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
AYURVEDIC VETERINARY MEDICINE
NOT FOR HUMAN USE
60g Net
15g Net
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

लॉन्ग पेपर/पीपली

-रंजन कुमार राकेश

पिप्पली (वानस्पतिक नाम *Piper longum*), पाइपरेसी परिवार का पुष्पीय पौधा है। इसकी खेती इसके फल के लिये की जाती है। पिप्पली की पत्तियाँ 5-9 सेमी लंबी और 5 सेमी चौड़ी होती हैं। निचले पत्ते मोटेतौर पर अंडाकार होते हैं, आधार पर बड़े पालियों के साथ गहराई से घिरे होते हैं, उप तीव्र, पूरे और चमकदार ऊपरी पत्ते गहरे हरे रंग के होते हैं। छोटे पेटीले या लगभग सीसिल के साथ होते हैं। पिप्पली के फल कई छोटे फलों से मिल कर बना होता है, जिनमें से हरेक एक खसखस के दाने के बराबर होता है। भारत में इसकी पैदावार उष्ण प्रदेशों यथा बंगाल, बिहार, असम, पूर्वी नेपाल, कोंकण से त्रवणकोर तक पश्चिमी घाट के वन तथा निकोबार द्वीप समूह में होती है। तमिलनाडु की अन्नामलाई पहाड़ियों तथा असम के चेरापूंजी क्षेत्र से लेकर आन्ध्र के विशाखापत्तनम् जिले के पहाड़ी इलाके में की जाती है। भारत के अलावा, मलेशिया, इंडोनेशिया, सिंगापुर और श्रीलंका में भी की जाती है।

यह मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है बड़ी और छोटी, परंतु इसकी चार जातियां होती हैं-

(क) पिप्पली-इस पिप्पली को मगधी या मघई पिप्पली भी कहा जाता है। बिहार के मगध क्षेत्र में होने से इसका नाम मगधी पड़ा है।

(ख) वनपिप्पली-यह प्रायः वनों में उगती है। यह छोटी, पतली तथा कम तीक्ष्ण होती है। इसे प्रायः पाइपर साइलवेटिकम के रूप में पहचाना जाता है। यह उत्तरी-दक्षिणी आसाम, बंगाल तथा वर्मा में अधिकता में पाई जाती है।

(ग) सिंहली पिप्पली-इसे जहाजी पिप्पली भी कहा जाता है, क्योंकि यह श्रीलंका तथा सिंगापुर आदि देशों से हमारे यहां आयात होती थी। इसे पाइपर रिट्रोफैक्टम के रूप में जाना जाता है।

(घ) गज पिप्पली-इस पिप्पली के बारे में कई भ्रांतियां हैं तथा कई वैज्ञानिक इसको चब्य का फल मानते हैं। उपरोक्त में से प्रथम तीन प्रकार की पिपपलियों को अलग-अलग द्रव्य नहीं माना जाता तथा इन सभी को पिप्पली अथवा पाइपर लौंगम के रूप में पहचाना जाता है।

मृदा एवं जलवायु

(1) पौधे को गर्म, नम जलवायु और 100 से 1000 एमएसएल के बीच ऊंचाई की आवश्यकता होती है।

(2) जैविक पदार्थ (ह्यूमस) से भरपूर अच्छी तरह से सूखा लाल, दोमट मिट्टी खेती के लिए अनुकूल है।

(3) यह 30-32 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से पनपता है, 150 सेमी वार्षिक वर्षा के साथ 60 प्रतिशत आर्द्रता।

खाद एवं उर्वरक

पिप्पली को भारी खाद की जरूरत होती है। 1 हेक्टेयर के लिए बीस टन गोबर खाद की आवश्यकता होती है, चूँकि फसल 3 साल तक आर्थिक पैदावार देगी, इसलिए खाद की जरूरत प्रत्येक वर्ष किया जाना चाहिए।

कृषि तकनीक

क्षेत्र को दो से तीन बार जोतना चाहिए और ठीक से समतल करना चाहिए। क्यारियों का आकार 3 मीटरX2.5 मीटर तैयार किया जाता है और गड्ढों को 60 सेमीX 60 सेमी और की दूरी पर खोदा जाता है। मिट्टी के साथ सूखे गोबर को 100 ग्राम प्रति गड्ढे की दर से मिश्रित किया जाता है। प्रत्येक गड्ढे में जड़ों के साथ दो कटे हुए कटिंग या चूसक लगाए जाते है। क्यारियों में किसी भी पानी के ठहराव से बचने के लिए, चौनलों को अतिरिक्त बारिश के पानी की निकासी के लिए

स्थान रखा जाता है।

सिंचाई

सप्ताह में एक बार आवश्यक करनी है

पौध प्रवर्धन

पिप्पली का प्रवर्धन बीजों से भी किया जा सकता है, सकर्स से भी, कलमों से भी तथा इसकी शाखाओं की लेयरिंग करके भी। व्यावसायिक कृषिकरण में इसका कलमों द्वारा प्रवर्धन किया जाना ज्यादा उपयुक्त होता है। इसके लिए सर्वप्रथम इन्हें नर्सरी में तैयार किया जाता है। इसकी नर्सरी बनाने का सर्वाधिक उपयुक्त समय फरवरी-मार्च माह होता है। इस समय पुराने पौधों की ऐसी शाखाएँ जो 8 से 10 से.मी. लम्बी हों, तथा जिनमें से प्रत्येक में 3 से 6 तक आंखें (नोड्स) हों, काट करके पॉलीथीन की थैलियों में रोपित कर दी जाती है। रोपाई से पूर्व इन थैलियों को मिट्टी, रेत तथा गोबर की खाद (प्रत्येक का 33 प्रतिशत) डाल करके तैयार किया जाता है। थैलियों में रोपण से पूर्व इन कलमों को गौमूत्र से ट्रीट कर लिया जाना चाहिए। इन पौलीथीन की थैलियों को किसी छायादार स्थान पर रखा जाना चाहिए तथा इनकी प्रतिदिन हल्की सिंचाई की जानी चाहिए। लगभग डेढ़ से दो महीने में ये कलमें खेत में लगाए जाने के लिए तैयार हो जाती है।

कटाई, प्रसंस्करण एवं उपज

पहले वर्ष में नियमित निराई करनी चाहिए और जब खरपतवार की वृद्धि देखी जाती है। क्यारियो में तुरंत करनी चाहिए। रोपण के लगभग पांच-छः माह के उपरान्त पौधों पर फल (स्पाइक्स) बनकर तैयार हो जाते हैं। जब ये फल हरे-काले रंग के हों तो इनको चुन लिया जाता है। पहले वर्ष के दौरान शुष्क स्पाइक की उपज लगभग 400/किलोग्राम/हेक्टेयर होती हे, यह तीसरे वर्ष में 1000 किग्रा/हेक्टेयर तक बढ़ जाती है, तीसरे वर्ष के बाद बेलें कम उत्पादक होती हैं। अतः पुनः उगाना चाहिए।

रासायनिक संचरना और औषधीय उपयोग

पिप्पली के सूखें फलों में 4-5 प्रतिशत तक पाइपरीन व पिपलार्टिन एल्केलाइड पाए जाते हैं। इनमें सिसेमिन व पिपलास्टिरॉल भी पाए जाते हैं। पिप्पली की जड़ों में पाइपरिन (0.15 से 0.18 प्रतिशत) पिपलार्टिन (0.13 से 0.20 प्रतिशत) पाइपरलौंगुमिनिन (0.2 से0 0. 25 प्रतिशत) तथा पाइपर लौंगुमाइन (0.02 प्रतिशत) पाए जाते हैं। इसमें एक सुगंधीय तेल (0.7 प्रतिशत) भी पाया जाता है। जो कालीमिर्च तथा अदरक के तेल जैसी खुशबू लिए होता है। यह पाचक अग्नि बढ़ाने वाली, वृष्य, पाक होने पर मधुर रसयुक्त, रसायन, तनिक उष्ण, कटु रसयुक्त, स्निग्ध, वात तथा कफ नाशक, तथा श्वास रोग, कास (खांसी), उदर रोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, प्लीहा, शूल और आमवात नाशक है। □□

चिड़ाना में पौध प्रशिक्षण एवं संग्रह केंद्र

आयुर्वेट का आरंभ से उद्देश्य रहा है-किसान की आय को बढ़ाना। इसी लक्ष्य को लेकर आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के माध्यम से सोनीपत के गांव चिड़ाना में अनेक किसान हितकारी गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। इसी श्रृंखला में, चिड़ाना में आयुर्वेट पशु पौध प्रशिक्षण एवं संग्रह केंद्र आरंभ किया गया है। इस केंद्र द्वारा पशुपालकों को अनेक सुविधाएं एवं जानकारियां दी जाएगीः-

- औषधीय पौधों की गुणवत्ता जांच
- कृषि विधि एवं प्रशिक्षण
- औषधीय पौधों की खेती
- वृक्षारोपण सामग्री व उत्पाद
- जड़ी बूटियों की मार्केटिंग

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करेंः-0120-7100280

मुर्गी पालन

एक फायदेमंद व्यवसाय

जब हम कृषि के बारे में बात कर रहे है, तो हम सिर्फ फसलों के बारे में बात न करे, बल्कि उन सारे चीजों के बारे में बात करे, जोकि एक किसान के लिए फायदे मंद हो, तो आज हम उन्ही व्यवसायों में से एक फायदेमंद व्यवसाय के बारे में बात करेंगे, जिसका नाम है-''मुर्गी पालन''। ये एक ऐसा व्यवसाय बन कर उभर रहा है, जिसका काम और बाजारी मांग दोनों समय के साथ तेजी से बढ़ रही है, आने वाले समय में इसकी मांग दुगुनी होने की उम्मीद है, मुर्गी पालन में वैसे तो ज्यादातर ब्रायलर और लेयर दोनों का ही काम काफी अच्छा है, लेकिन आज हम जानेंगे ''ब्रायलर'' मुर्गे के बारे में जो अपना जीवन काल 40 से 45 दिन में पूरा कर लेता है।

बात बस इतनी सी है की किसी भी व्यवसाय को चलाने के लिए ये जरूरी है कि हम एक निश्चित जोड़ घटाव करे। हमें ये पता होना चाहिए कि हमारा मुनाफा और नुकसान कितना और किस हिसाब से चल रहा है, कृषि दरअसल एक स्मार्ट व्यवसाय है, जिसे एक सटीक गणना से चलाने की आवश्यकता है, यहां इस बात को गौर करने की आवश्यकता है कि जब हम कृषि के बारे में बात कर रहे है, तो हम सिर्फ फसलों के बारे में बात न करे, बल्कि उन सारे चीजों के बारे में बात करे जो कि एक किसान के लिए फायदे मंद हो, तो आज हम उन्ही व्यवसायों में से एक फायदेमंद व्यवसाय के बारे में बात करेंगे जिसका नाम है- ''मुर्गी पालन''।

ये एक ऐसा व्यवसाय बन कर उभर रहा है, जिसका काम और बाजारी मांग दोनों समय के साथ तेजी से बढ़ रही है, आने वाले समय में इसकी मांग दुगुनी होने कि उम्मीद है, मुर्गी पालन में वैसे तो ज्यादातर ब्रायलर और लेयर दोनों का ही काम काफी अच्छा है, लेकिन आज हम जानेंगे ''ब्रायलर'' मुर्गे के बारे में जो अपना जीवन काल 40 से 45 दिन में पूरा कर लेता है।

इस व्यवसाय के लिए जरूरी है कि एक सही गणना कि जाए, उपभोक्ता अच्छे गुणवत्ता वाला मांस ढूंढता है, जो अच्छी क्वालिटी का होने के साथ साथ स्वादिष्ट भी हो, कुछ अच्छे ब्रायलर ब्रीड्स निम्नलिखित हैः-

- करिबरो
- कृषीबरो
- ह्यब्रो
- रेड वनराजा
- ग्रामा प्रिया

मुर्गियों को रखने के लिए एक अच्छे बाड़े की जरुरत होती है जिसके लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेः-

- बाड़े में धूप डायरेक्ट न जाए, अधिक गर्मी मुर्गियों के लिए सही नहीं।
- पानी का सही इंतजाम हो, परन्तु पानी का जमाव न हो, ऐसा होने से संक्रमण का खतरा रहता है।
- आस-पास साफ-सफाई हो एवं लिट्टेर मैनेजमेंट की सही व्यवस्था हो, इसके लिए बाड़े को ऊपर बनाये, एवं फ्लोरिंग खाँचो से करे, ताकि लिट्टेर सीधे जमीन पर गिरे, बाड़े से बाहर।
- प्रकाश एवं वेंटिलतिओं का इंतजाम भी सही रखे, तथा जालियों को इस प्रकार बनाये, ताकि किसी बाहरी जानवर

के आक्रमण से मुर्गियां बची रहें।

- इस बात को भी सुनिश्चित करें कि बाड़े से मुर्गियों को लाने एवं ले जाने के लिए सड़क मार्ग भी हो, क्योंकि देरी होने से मुर्गियों में गुणवत्ता की कमी आ जाती है।
- बाड़े को तैयार करने के लिए आप मिट्टी, प्लास्टिक, बांस तथा पराली का इस्तेमाल कर के, सस्ती और अच्छे बाड़े बना सकते है।
- हर मुर्गी के लिए लगभग एक स्क्वायर फीट की जगह तो होनी ही चाहिए इस से उन्हें विकास में मदद मिलती है।

बात करे मुर्गियों के खान पान कि तो आप इस बात का ध्यान रखें कि इस चीज में आपको काफी सतर्कता की जरुरत पड़ेगी एवं एक अच्छा मील ही, अच्छे मांस की गारंटी दे पायेगा। कार्बोहाइड्रेट, फैट्स, विटामिन, प्रोटीन एवं मिनरल के सही तालमेल को बना के रखना अति आवश्यक है, सही मायने में कहा जाये तो बैलेंस्ड डाइट की आवश्यकता मुर्गियों को भी पड़ती है, मुर्गियों का भोजन उनके जीवन काल एवं वजन के आधार पर तीन हिस्सों में बंटा हुआ है:-

- **प्री-स्टार्टर**-यह दाना पहले दिन से 10 दिन तक ब्रायलर चूजों को दिया जाता है। यह दाना चूजों को देना जरूरी होता है, क्योंकि इसमें उनके शरीर के लिए आवश्यक विटामिन्स होते हैं। दूसरी बात यह छोटे दानों में ग्राइंड किया हुआ होता है, ताकि चूजे अच्छे से दाना खा सकें। यह स्टार्टर और फिनिशर दाने से महंगा मिलता है। अगर आप प्री-स्टार्टर की जगह स्टार्टर का उपयोग करेंगे, तो छोटे चूजे अच्छे से नहीं खा पाएंगे, जिसके कारण उनका विकास सही तरीके से नहीं हो पायेगा। इसके कारण ब्रायलर मुर्गियों को कई प्रकार की बीमारियाँ होने का भी खतरा है।

- **स्टार्टर**-यह दाना प्री-स्टार्टर के बाद दिया जाता है। यह दाना प्री-स्टार्टर से थोड़ा बड़ा होता है और 11-20 दिन के ब्रायलर चूजों को दिया जाता है। 11-20 दिन तक के ब्रायलर चूजों का वजन लगभग 700-800 ग्राम तक हो जाता है, अगर आप अच्छे दाने का उपयोग करते हैं तो।
- **स्टार्टर**-यह दाना प्री-स्टार्टर के बाद दिया जाता है। यह दाना प्री-स्टार्टर से थोड़ा बड़ा होता है और 11-20 दिन के ब्रायलर चूजों को दिया जाता है। 11-20 दिन तक के ब्रायलर चूजों का वजन लगभग 700-800 ग्राम तक हो जाता है, अगर आप अच्छे दाने का उपयोग करते हैं तो।
- **फिनिशर**-यह दाना प्री-स्टार्टर और स्टार्टर से बड़ा होता है। इस दाना को ब्रायलर मुर्गियों को 20 दिन होने के बाद से बाजार में बेचने तक दिया जाता है। इस समय मुर्गियों का वजन 800 ग्राम से ज्यादा हो जाता है। इसलिए वो बड़े दाने को आसानी से खा सकते हैं।

मुर्गियों को साफ सफाई के साथ रख कर तथा उनके खान पान पर ध्यान रखते हुए हम, निश्चय ही एक अच्छा मुनाफा कमा सकते है, मुर्गी पालन कई तरह से लाभकारी है:

- ये कमाई करने का एक सुलभ एवं अच्छा तरीका है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी वजह से आजीविका बढ़ी है।
- इसमें इनपुट कास्ट कम है तथा आउटपुट काफी अच्छी है।
- मुर्गियों की मांग बाजार में बढ़ती जा रही है, इसलिए इस व्यवसाय में घाटे की संभावना बेहद कम है।

इस प्रकार हम देखते है कि मुर्गी पालन किस प्रकार से की जा सकती है, एवं इसके कितने फायदे है।

□□

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक
AYURVET
पशुचिकित्सकों द्वारा अपनाया गया वैज्ञानिक रूप से जांचा परखा भरोसेमंद हर्बल उपाय
रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए
पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान
RESTOBAL
रैस्टोबल
500 मि.ली.
1 लीटर

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम

बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन

स्वस्थ ब्यांत

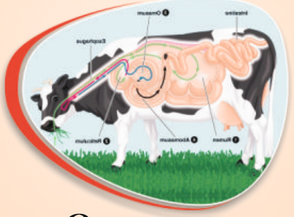

बढ़िया पाचन प्रणाली

स्वस्थ अयन

एक्सापार
जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए

रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये,
तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

AYURVET™
आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान आधुनिक अनुसंधान